संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
१ नवम्बर २०१०
वर्ष : २० अंक : ५
(निरंतर अंक : २१५)

दीपावली : ५ नवम्बर

परम पूज्य
संत श्री आसारामजी बापू

आपका वित्त आपको बाँधनेवाला न हो, आपका वित्त आपको विषय-विकारों में न गिरा दे, इसीलिए दीपावली की रात्रि को लक्ष्मीजी का पूजन किया जाता है। लक्ष्मी आपके जीवन में महालक्ष्मी होकर आये। वासनाओं के वेग को जो बढ़ाये, वह 'वित्त' है और वासनाओं को श्रीहरि के चरणों में पहुँचाये, वह 'महालक्ष्मी' है। नारायण में प्रीति करानेवाला जो वित्त है, वह है महालक्ष्मी।

विभिन्न आश्रमों में आयोजित श्राद्धकर्म में सम्मिलित विशाल जनसमुदाय
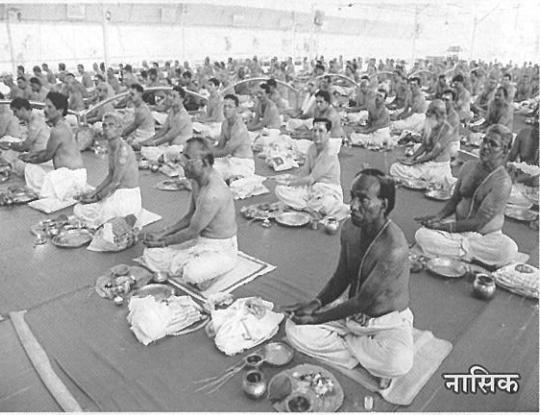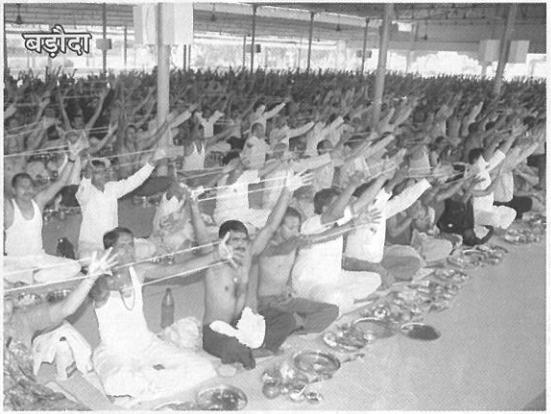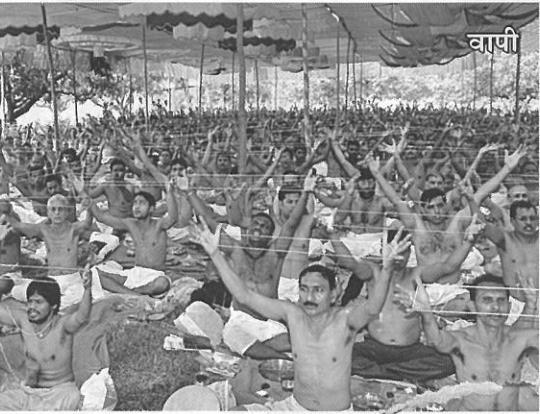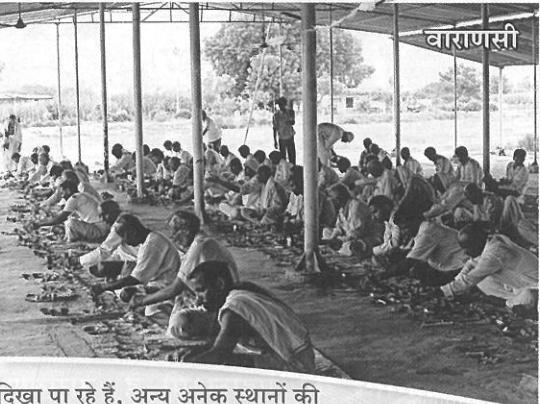
स्थानाभाव के कारण यहाँ कुछ ही अंश दिखा पा रहे हैं, अन्य अनेक स्थानों की तस्वीरों हेतु आश्रम की वेबसाइट www.ashram.org देखें।

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका
हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलगू, कन्नड़, अंग्रेजी व सिंधी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २० अंक : ५
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २१५)
१ नवम्बर २०१० मूल्य : रु. ६-००
कार्तिक-मार्गशीर्ष वि.सं. २०६७

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात).
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, "सुदर्शन", मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद- ३८०००९ (गुजरात).
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. २२५/-
(४) आजीवन : रु. ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में

(सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : रु. ३००/-
(२) द्विवार्षिक : रु. ६००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ 20
(२) द्विवार्षिक : US $ 40
(३) पंचवार्षिक : US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात).
फोन नं. : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

इस अंक में...

विभिन्न टी.वी. चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS	care WORLD	दिशा	JUS one (अमेरिका)
रोज सुबह ५-३० व ७-३० बजे तथा रात्रि १०-०० बजे	रोज सुबह ७-०० बजे	रोज सुबह ८-१० बजे	सोम से शुक्र शाम ७ बजे, शनि-रवि शाम ७-३० बजे

✻ A2Z चैनल रिलायंस के 'बिग टीवी' पर भी उपलब्ध है। चैनल नं. 425
✻ care WORLD चैनल 'डिश टीवी' पर उपलब्ध है। चैनल नं. 770
✻ दिशा चैनल 'डिश टीवी' पर उपलब्ध है। चैनल नं. 757
✻ JUS one चैनल 'डिश टीवी' (अमेरिका) पर उपलब्ध है। चैनल नं. 581

जीवन का दृष्टिकोण उन्नत बनाती है 'गीता'

(श्रीमद् भगवद्गीता जयंती : १७ दिसम्बर)

(पूज्य बापूजी की सारगर्भित अमृतवाणी)

'यह मेरा हृदय है'- ऐसा अगर किसी ग्रंथ के लिए भगवान ने कहा हो तो वह गीता का ग्रंथ है। **गीता मे हृदयं पार्थ।** 'गीता मेरा हृदय है।' अन्य किसी ग्रंथ के लिए भगवान ने यह नहीं कहा है कि 'यह मेरा हृदय है।'

भगवान आदिनारायण की नाभि से हाथों में वेद धारण किये ब्रह्माजी प्रकटे, ऐसी पौराणिक कथाएँ आपने-हमने सुनी, कही हैं। लेकिन नाभि की अपेक्षा हृदय व्यक्ति के और भी निकट होता है। भगवान ने ब्रह्माजी को तो प्रकट किया नाभि से लेकिन गीता के लिए कहते हैं :

गीता मे हृदयं पार्थ। 'गीता मेरा हृदय है।'

परम्परा तो यह है कि यज्ञशाला में, मंदिर में, धर्मस्थान पर धर्म-कर्म की प्राप्ति होती है लेकिन गीता ने गजब कर दिया - **धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे...** युद्ध के मैदान को धर्मक्षेत्र बना दिया। पद्धति तो यह थी कि एकांत अरण्य में, गिरि-गुफा में धारणा, ध्यान, समाधि करने पर योग प्रकट हो लेकिन युद्ध के मैदान में गीता ने योग प्रकटाया। परम्परा तो यह है कि शिष्य नीचे बैठे और गुरु ऊपर बैठे। शिष्य शांत हो और गुरु अपने-आपमें तृप्त हो तब तत्त्वज्ञान होता है लेकिन गीता ने कमाल कर दिया है। हाथी चिंघाड़ रहे हैं, घोड़े हिनहिना रहे हैं, दोनों सेनाओं के योद्धा प्रतिशोध की आग में तप रहे हैं। किंकर्तव्यविमूढ़ता से आक्रांत मतिवाला अर्जुन ऊपर बैठा है और गीताकार भगवान नीचे बैठे हैं। अर्जुन रथी है और गीताकार सारथी हैं। कितनी करुणा छलकी होगी उस ईश्वर को, उस नारायण को अपने सखा अर्जुन व मानव-जाति के लिए! केवल घोड़ागाड़ी ही चलाने को तैयार नहीं अपितु आज्ञा मानने को भी तैयार! नर कहता है कि 'दोनों सेनाओं के बीच मेरे रथ को ले चलो।' रथ को चलाकर दोनों सेनाओं के बीच लाया है। कौन? नारायण। नर का सेवक बनकर नारायण रथ चला रहा है और उसी नारायण ने अपने वचनों में कहा :

गीता मे हृदयं पार्थ।

पौराणिक कथाओं में मैंने पढ़ा है, संतों के मुख से मैंने सुना है, भगवान कहते हैं : ''मुझे वैकुण्ठ इतना प्रिय नहीं, मुझे लक्ष्मी इतनी प्रिय नहीं, जितना मेरी गीता का ज्ञान कहनेवाला मुझे प्यारा लगता है।'' कैसा होगा उस गीताकार का गीता के प्रति प्रेम!

गीता पढ़कर १९८५-८६ में गीताकार की भूमि को प्रणाम करने के लिए कनाडा के प्रधानमंत्री मि. पीअर ट्रुडो भारत आये थे। जीवन की शाम हो जाय और देह को दफनाया जाय उससे पहले अज्ञानता को दफनाने के लिए उन्होंने अपने प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया और एकांत में चले गये। वे अपने शारीरिक पोषण के लिए एक दुधारू गाय और आध्यात्मिक पोषण के लिए उपनिषद् और गीता साथ में ले गये। ट्रुडो ने कहा है : ''मैंने बाइबिल पढ़ी, एंजिल पढ़ी और अन्य धर्मग्रंथ पढ़े। सब ग्रंथ अपने-अपने स्थान पर ठीक हैं किंतु हिन्दुओं का यह 'श्रीमद् भगवद्गीता' ग्रंथ तो अद्भुत है। इसमें किसी मत-मजहब, पंथ या सम्प्रदाय की निंदा-स्तुति नहीं है वरन्

इसमें तो मनुष्यमात्र के विकास की बातें हैं। गीता मात्र हिन्दुओं का ही धर्मग्रंथ नहीं है, बल्कि मानवमात्र का धर्मग्रंथ है।''

गीता ने किसी मत, पंथ की सराहना या निंदा नहीं की अपितु मनुष्यमात्र की उन्नति की बात कही। और उन्नति कैसी ? एकांगी नहीं, द्विअंगी नहीं, त्रिअंगी नहीं सर्वांगीण उन्नति। कुटुम्ब का बड़ा जब पूरे कुटुम्ब की भलाई का सोचता है तब ही उसके बड़प्पन की शोभा है। और कुटुम्ब का बड़ा तो राग-द्वेष का शिकार हो सकता है लेकिन भगवान में राग-द्वेष कहाँ ! विश्व का बड़ा पूरे विश्व की भलाई सोचता है और ऐसा सोचकर वह जो बोलता है वही गीता का ग्रंथ बनता है।

पर कैसा है यह ग्रंथ ! थोड़े ही शब्दों में बहुत सारा ज्ञान बता दिया और युद्ध के मैदान में भी किसी विषय को अछूता न छोड़ा। है तो लड़ाई का माहौल और तंदुरुस्ती की बात भी नहीं भूले !

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥

'दुःखों का नाश करनेवाला योग तो यथायोग्य आहार-विहार करनेवाले का, कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करनेवाले का और यथायोग्य सोने तथा जागनेवाले का ही सिद्ध होता है।' **(गीता : ६.१७)**

केवल शरीर का स्वास्थ्य नहीं, मन का स्वास्थ्य भी कहा है।

सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ।

सुखद स्थिति आ जाय चाहे दुःखद स्थिति आ जाय, दोनों में विचलित न हों। दुःख पैरों तले कुचलने की चीज है और सुख बाँटने की चीज है। दृष्टि दिव्य बन जाय, फिर आपके सभी कार्य दिव्य हो जायेंगे। छोटे-से-छोटे व्यक्ति को अगर सही ज्ञान मिल गया और उसने स्वीकार कर लिया तो वह महान बन के ही रहेगा। और महान-से-महान दिखता हुआ व्यक्ति भी अगर गीता के ज्ञान के विपरीत चलता है तो देखते-देखते उसकी तुच्छता दिखाई देने लगेगी। रावण और कंस ऊँचाइयों को तो प्राप्त थे लेकिन दृष्टिकोण नीचा था तो अति नीचता में जा गिरे। शुकदेवजी, विश्वामित्रजी साधारण झोंपड़े में रहते हैं, खाने-पीने का ठिकाना नहीं लेकिन दृष्टिकोण ऊँचा था तो राम-लखन दोनों भाई विश्वामित्र की पगचम्पी करते हैं।

गुरु तें पहिलेहिं जगतपति जागे रामु सुजान।
(श्री रामचरित. बा.कां. : २२६)

विश्वामित्रजी जगें उसके पहले जगपति जागते हैं क्योंकि विश्वामित्रजी के पास उच्च विचार है, उच्च दृष्टिकोण है। ऊँची दृष्टि का जितना आदर किया जाय उतना कम है। और ऊँची दृष्टि मिलती कहाँ से है ? गीता जैसे ऊँचे सद्ग्रंथों से, सत्शास्त्रों से और जिन्होंने ऊँचा जीवन जिया है, ऐसे महापुरुषों से। बड़े-बड़े दार्शनिकों के दर्शनशास्त्र हम पढ़ते हैं, हमारी बुद्धि पर उनका थोड़ा-सा असर होता है लेकिन वह लम्बा समय नहीं टिकता। लेकिन जो आत्मनिष्ठ धर्माचार्य हैं, उनका जीवन ही ऐसा ऊँचा होता है कि उनकी हाजिरीमात्र से लाखों लोगों का जीवन बदल जाता है। वे धर्माचार्य चले जाते हैं तब भी उनके उपदेश से धर्मग्रंथ बनता है और लोग पढ़ते-पढ़ते आचरण में लाकर धर्मात्मा होते चले जाते हैं।

मनुष्यमात्र अपने जीवन की शक्ति का एकाध हिस्सा खानपान, रहन-सहन में लगाता है और दो-तिहाई अपने इर्द-गिर्द के माहौल पर प्रभाव डालने की कोशिश में ही खर्च करता है। चाहे चपरासी हो चाहे क्लर्क हो, चाहे तहसीलदार हो चाहे मंत्री हो, प्रधानमंत्री हो, चाहे बहू हो चाहे सास हो, चाहे सेल्समैन हो चाहे ग्राहक हो, सब यही कर रहे हैं। फिर भी आम आदमी का प्रभाव वही जल में पैदा हुए बुलबुले की तरह बनता रहता है और मिटता रहता है। लेकिन जिन्होंने स्थायी तत्त्व में विश्रांति पायी है, उन आचार्यों का, उन ब्रह्मज्ञानियों का, उन कृष्ण का प्रभाव अब भी

चमकता-दमकता दिखाई दे रहा है।

ख्वाजा दिल मुहम्मद ने लिखा : ''रूहानी गुलों से बना यह गुलदस्ता हजारों वर्ष बीत जाने पर भी दिन दूना और रात चौगुना महकता जा रहा है। यह गुलदस्ता जिसके हाथ में भी गया, उसका जीवन महक उठा। ऐसे गीतारूपी गुलदस्ते को मेरा प्रणाम है। सात सौ श्लोकरूपी फूलों से सुवासित यह गुलदस्ता करोड़ों लोगों के हाथ गया, फिर भी मुरझाया नहीं।''

कनाडा के प्रधानमंत्री ट्रुडो एवं ख्वाजा-दिल-मुहम्मद ही इसकी प्रशंसा करते हैं ऐसी बात नहीं, कट्टर मुसलमान की बच्ची और अकबर की रानी ताज भी इस गीताकार के गीत गाये बिना नहीं रहती।

सुनो दिलजानी मेरे दिल की कहानी तुम।
दस्त ही बिकानी, बदनामी भी सहूँगी मैं॥
देवपूजा ठानी मैं, नमाज हूँ भुलानी।
तजे कलमा कुरान सारे गुनन गहूँगी मैं॥
साँवला सलोना सिरताज सिर कुल्ले दिये।
तेरे नेह दाग में, निदाग हो रहूँगी मैं॥
नन्द के कुमार कुरबान तेरी सूरत पै।
हूँ तो मुगलानी, हिन्दुआनी ह्वै रहूँगी मैं॥

अकबर की रानी ताज अकबर को लेकर आगरा से वृंदावन आयी। कृष्ण के मंदिर में आठ दिन तक कीर्तन करते-करते जब आखिरी घड़ियाँ आयीं, तब 'हे कृष्ण ! मैं तेरी हूँ, तू मेरा है...' कहकर उसने सदा के लिए माथा टेका और कृष्ण के चरणों में समा गयी। अकबर बोलता है : ''जो चीज जिसकी थी, उसने उसको पा लिया। हम रह गये...''

इतना ही नहीं महात्मा थोरो भी गीता के ज्ञान से प्रभावित हो के अपना सब कुछ छोड़कर अरण्यवास करते हुए एकांत में कुटिया बनाकर जीवन्मुक्ति का आनंद लेते थे। उनके शिष्य आकर देखते कि उनके गुरु के आसपास कहीं साँप घूमते हैं तो कहीं बिच्छू, फिर भी उन्हें कुछ भय नहीं, चिंता नहीं, शोक नहीं ! एक शिष्य ने आते ही प्रार्थना की कि ''गुरुवर ! आप मुझे आज्ञा दीजिये, मैं आपको सुरक्षित जगह पर ले जाऊँ।''

जिनका साहित्य गांधीजी भी आदर से पढ़ते थे, ऐसे महात्मा थोरो हँस पड़े। बोले : ''मेरे पास गीता का अद्‌भुत ग्रंथ होने से मैं पूर्ण सुरक्षित हूँ और सर्वत्र आत्मदृष्टि से निहारता हूँ। मैंने आत्मनिष्ठा पा ली है, जिससे सर्प मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। गीता के ज्ञान की ऐसी महिमा है कि मैं निर्भीक बन गया हूँ। वे मुझसे निश्चिंत हैं और मैं उनसे निश्चिंत हूँ।''

जीवन का दृष्टिकोण उन्नत बनाने की कला सिखाती है गीता ! युद्ध जैसे घोर कर्मों में भी निर्लेप रहना सिखाती है गीता ! कर्तव्यबुद्धि से ईश्वर की पूजारूप कर्म करना सिखाती है गीता ! मरने के बाद नहीं, जीते-जी मुक्ति का स्वाद दिलाती है गीता ! □

मोक्षदा एकादशी

(मोक्षदा एकादशी : १७ दिसम्बर)

भगवान श्रीकृष्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को कहा : ''राजन् ! 'मोक्षदा एकादशी' के दिन यत्नपूर्वक तुलसी की मंजरी तथा धूप-दीपादि से भगवान दामोदर का पूजन करना चाहिए। 'मोक्षदा एकादशी' बड़े-बड़े पातकों का नाश करनेवाली है। उस दिन रात्रि में मेरी प्रसन्नता के लिए नृत्य, गीत और स्तुति के द्वारा जागरण करना चाहिए। जिसके पितर पापवश नीच योनि में पड़े हों, वे इस एकादशी का व्रत करके इसका पुण्यदान अपने पितरों को करें तो पितर मोक्ष को प्राप्त होते हैं। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। यह मोक्ष देनेवाली 'मोक्षदा एकादशी' मनुष्यों के लिए चिंतामणि के समान समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाली है।''

(टिप्पणी : विशेष जानकारी के लिए आश्रम से प्रकाशित 'एकादशी माहात्म्य' पुस्तक पढ़ें।) □

जीव-सेवा ही शिव-सेवा

स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज एक बड़े ही उच्चकोटि के वीतराग ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष थे। एक बार वे कुछ ब्रह्मचारियों को लेकर कुरुक्षेत्र गये। दैवयोग से उन दिनों कुरुक्षेत्र और आसपास के क्षेत्रों में वर्षा न होने के कारण सूखा पड़ गया था। जलाभाव के कारण चारों ओर हाहाकार मचा हुआ था। पशु-पक्षी भी पानी न मिलने के कारण प्यास से मरने लगे थे। सर्वत्र चिंता व्याप्त थी। स्वामीजी एक देवमंदिर में ठहरे हुए थे। वहाँ उन्होंने एक अत्यंत करुणाजनक दृश्य देखा। मंदिर के पास एक बहुत बड़ा तालाब था। उस तालाब के एक छोटे-से गड्ढे में बहुत थोड़ा पानी रह गया था। पानी न होने के कारण तालाब की हजारों मछलियाँ मर चुकी थीं तथा शेष बची हजारों मछलियाँ उस गड्ढे के थोड़े-से पानी में एक जगह एकत्रित हो गयी थीं और पानी के अभाव में छटपटा रही थीं। ऊपर से बड़ी तेज गर्मी पड़ रही थी। गड्ढे का पानी भी एक-दो दिन में सूखनेवाला था। ऐसा होने पर बाकी बची वे हजारों मछलियाँ भी तड़प-तड़पकर मर जातीं। स्वामीजी से यह करुणाजनक दृश्य नहीं देखा गया। वे व्याकुल हो उठे और किस प्रकार इन मछलियों के प्राण बचाये जायें, इस पर विचार करने लगे।

स्वामीजी के आने का शुभ समाचार सुनकर अनेक लोग उनके दर्शन के लिए आये और सबने करबद्ध होकर एक ही प्रार्थना की कि ''महाराज ! बहुत दिनों से वर्षा न होने के कारण खेती को बड़ा नुकसान पहुँच रहा है। तालाब और कुएँ आदि का जल भी सूख गया है। अब तो पशु-पक्षी सभी पानी के बिना मरने लगे हैं। आप ऐसा उपाय बताने की कृपा करें कि वर्षा हो जाय और सबको सुख-शांति प्राप्त हो।''

स्वामीजी बोले : ''भाई ! भगवान की कृपा चाहते हो तो उन्हें प्रसन्न करो। वे ही तुम्हारे ऊपर कृपा कर वर्षा करके तुम्हारा दुःख दूर करेंगे।''

''महाराजजी ! क्या किया जाय, जिससे भगवान प्रसन्न होकर हम पर कृपा करें ? आप इसका कोई उपाय बतायें।''

''भगवान को प्रसन्न करने का तात्कालिक उपाय यही है कि तुम यहाँ के जीवों पर कृपा करो, तभी भगवान तुमसे प्रसन्न होकर तुम्हारे ऊपर कृपा करेंगे।''

''महाराज ! हममें इतना सामर्थ्य कहाँ है कि यहाँ के जीवों पर कृपा करें। हम तो सर्वथा असमर्थ हैं।''

''हम तुम्हें भगवान को प्रसन्न कर उनकी कृपा प्राप्त करने का ऐसा ही साधन बतायेंगे, जो तुम कर सकोगे।''

''महाराज ! आप आज्ञा दीजिये, हम उसका अवश्य पालन करेंगे।''

स्वामीजी ने सामने के उस सूखे तालाब की ओर संकेत करके कहा : ''देखो, उस तालाब का सारा पानी सूख गया है, जिसके कारण हजारों मछलियाँ मर चुकी हैं और बाकी जीवित बची मछलियाँ उस छोटे-से गड्ढे के जल में एक जगह इकट्ठी होकर पानी के बिना छटपटा रही हैं। यदि इन्हें जल देकर इनकी रक्षा नहीं की गयी तो एक-दो दिन में ही ये भी जल के बिना तड़प-तड़पकर प्राण दे देंगी।''

आतुरता एवं उत्सुकतावश गाँववालों ने एक स्वर में कहा : ''महाराजजी ! हम क्या करें ?''

''तुम इनके ऊपर कृपा करो तो भगवान स्वयं तुम्हारे ऊपर कृपा करेंगे । इन मछलियों के लिए जल लाकर इस तालाब में डालो ।''

''महाराजजी ! जल तो है ही नहीं, फिर लायें कहाँ से ?''

गाँववालों की यह बात सुनकर स्वामीजी स्वयं उठे और पास के कुएँ पर पड़ी बाल्टी को लटकाकर जल खींचने को उद्यत हो गये । यह देख सभी गाँववाले स्तब्ध रह गये । फिर क्या था, तत्काल गाँववालों ने कुएँ में से जल निकाल-निकालकर उस तालाब में डालना शुरू किया । अब तो जिसे देखो वह पानी लिये दौड़ रहा था । कोई बाल्टी में, कोई घड़े में तो कोई कनस्तर में जल ले जाकर तालाब में छोड़ने लगा । अब तालाब में जल-ही-जल दिख रहा था । मछलियों का छटपटाना बंद हो गया था, उनके प्राणों की रक्षा जो हो गयी थी ।

मछलियों के प्राण-रक्षारूपी इस यज्ञ से भगवान गाँववालों पर अत्यंत प्रसन्न हुए और तत्काल एक अद्‌भुत चमत्कार हुआ । कई दिनों से जो आकाश बिल्कुल साफ था और बादल नाम को भी नहीं थे, वह आकाश सबके देखते-देखते एकदम बादलों से भर उठा । मेघों का गरजना और विद्युत का चमकना शुरू हो गया तथा मूसलधार वर्षा होने लगी । देखते-ही-देखते चारों ओर जल-ही-जल भर गया । चारों ओर प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी । उस क्षेत्र के सूखा-पीड़ित लोगों की खुशी का कोई ठिकाना न रहा । सभी गाँववाले स्वामीजी के चरणों में गिर पड़े और कहने लगे :

''महाराजजी ! आपका यह कहना कि 'तुम यहाँ के जीवों पर कृपा करो तो तुम्हारे ऊपर भगवान कृपा करेंगे ।' यह बात अक्षरशः सत्य निकली । आज हम लोगों ने यह प्रत्यक्ष अनुभव किया है कि 'जीव-प्रसन्नता ही भगवत्प्रसन्नता है, जीव-सेवा ही शिव-सेवा है । अतः प्राणिमात्र को भगवान ही मानकर उनकी सेवा करनी चाहिए ।'' ❑

महालक्ष्मी को कैसे बुलायें ?

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

लक्ष्मी चार प्रकार की होती है । एक होता है वित्त, दूसरा होता है धन, तीसरी होती है लक्ष्मी और चौथी होती है महालक्ष्मी । जिस धन से भोग-विलास, आलस्य, दुराचार हो वह पापलक्ष्मी, अलक्ष्मी है । जिस धन से सुख-वैभव भोगा जाय वह वित्त है । जिस धन से कुटुम्ब-परिवार को भी सुखी रखा जाय वह लक्ष्मी है और जिस धन से परमात्मा की सेवा हो, परमात्म-तत्त्व का प्रचार हो, परमात्म-शांति के गीत दूसरों के दिल में गुँजाये जायें वह महालक्ष्मी है । हम लोग इसीलिए महालक्ष्मी की पूजा करते हैं कि हमारे घर में जो धन आये, वह महालक्ष्मी ही आये । महालक्ष्मी नारायण से मिलाने का काम करेगी । जो नारायण के सहित लक्ष्मी है, वह कुमार्ग में नहीं जाने देती । वह धन कुमार्ग में नहीं ले जायेगा, सन्मार्ग में ले जायेगा । धन में ६४ दोष हैं और १६ गुण हैं, ऐसा वसिष्ठजी महाराज बोलते हैं ।

सनातन धर्म ऐसा नहीं मानता है कि धनवानों को ईश्वर का द्वार प्राप्त नहीं होता, धनवान ईश्वर को नहीं पा सकते । अपने शास्त्रों के ये दृष्टांत हैं कि जनक राजा राज्य करते थे, मिथिला नरेश थे और आत्मसाक्षात्कारी थे । भगवान राम जिनके घर में प्रकट हुए, वे दशरथ राजा राज्य करते थे, धनवान थे ही । जो सत्कर्मों में लक्ष्मी को लुटाता है, खुले हाथ पवित्र कार्यों में लगाता है उसकी लक्ष्मी कई पीढ़ियों तक बनी रहती है, जैसे राजा दशरथ, जनक आदि के जीवन में देखा गया । २२ पीढ़ियाँ चलीं जनक की, २२ जनक हो गये ।

दीपावली में लक्ष्मी-पूजन की प्रथा देहातों में भी है, शहरों में भी है । इस पर्व में जो व्यक्ति लक्ष्मी और तुलसी का आदर-पूजन करेगा, वह धन-धान्य तथा आरोग्य पाकर सुखी रहेगा । ❑

आत्मविचार से ही परम कल्याण

('श्री योगवासिष्ठ' पर पूज्य बापूजी की सरल व्याख्या)

वसिष्ठजी महाराज कहते हैं : ''हे रामजी ! यदि आत्मतत्त्व की जिज्ञासा में हाथ में ठीकरा ले चांडाल के घर से भिक्षा ग्रहण करे तो वह भी श्रेष्ठ है, पर मूर्खता से जीना व्यर्थ है।''

ब्रह्मज्ञान का सत्संग मिलता हो और चांडाल के घर की भिक्षा ठीकरे में खाने को मिले तो भी अन्य ऐश्वर्यों से अच्छा है। अन्य ऐश्वर्य भोगेगा तो फिर मरेगा, नरकों में जायेगा लेकिन सत्संग का आश्रय लेगा तो अमरस्वरूप ब्रह्म से एक हो जायेगा। इसलिए नित्य भगवच्चिंतन, भगवद्ध्यान और भगवद्-प्रसन्नता के लिए सेवाकार्य करना चाहिए। आलस्य में अथवा भटकने में समय नहीं गँवाना चाहिए। जैसा मन कहे, वैसा नहीं करना चाहिए। जैसा शास्त्र, भगवान और सद्गुरु कहते हैं, वैसा करने से कल्याण होगा। मनमुख होने से तो तबाही हो जाती है। मन कामी, मन क्रोधी, मन पलायनवादी, मन अष्टावक्र (आठ वक्रोंवाला, टेढ़ी चालवाला)... मन के साथ जुड़ेगा तो तबाह कर देगा, इसलिए गुरुमंत्र के साथ, भगवान के साथ, आत्मा-परमात्मा के साथ जुड़े रहना चाहिए। साधन-भजन दृढ़ नहीं होगा तो मन उड़ाकर ले जायेगा। सुमेरु पर्वत को तूफान नहीं उड़ाता लेकिन तिनके को तो साधारण हवा भी उड़ा के ले जाती है। ऐसे ही परमात्मा हैं सुमेरु के सुमेरु, उनका आश्रय लें। संसार की चीजों का आश्रय लेंगे तो मन उड़ाकर ले जायेगा।

वसिष्ठजी बोले : ''हे रामजी ! आत्मज्ञान, विचार बिना वर और शाप से प्राप्त नहीं होता।''

हाँ ! ऐसा नहीं कि आशीर्वाद कर दिया तो आत्मज्ञान हो जायेगा। नहीं, नहीं। आशीर्वाद से और कोई फायदा हो सकता है लेकिन आत्म-साक्षात्कार केवल आशीर्वाद से नहीं होता। गुरु उपदेश दें, उसका फिर विचार करें और आत्मज्ञान का विचार करते-करते आत्मा में, परमात्मा में ठहरें। दुःख या क्रोध आये उस समय द्रष्टाभाव से देखें, चिंता आये उस समय देखें, मन में विकार आये उस समय देखें। विकारों से खिंचकर नहीं जायें, परिस्थितियों के दास न बनें। अंदर देखें, सावधान रहें, जप करें। जो इसी जन्म में मुक्ति पाना चाहता है उसको तीन घंटे प्रणव का जप, तीन घंटे ध्यान, तीन घंटे शास्त्र-विचार और तीन घंटे गुरुसेवा करनी चाहिए। तत्परता हो तो काम बन जाय। समय बरबाद न करें, इधर-उधर की बातें न सुनें, केवल ईश्वरप्राप्ति का यत्न करें। आत्मज्योति जगाने के लिए तत्पर हो जायें।

आत्मा तो अपने पास है, परमात्मा तो है फिर भी दुःखों का अंत क्यों नहीं होता ? कि उसको (परमात्मा को) नहीं जाना। 'योगवासिष्ठ बार-बार पढ़ें तो मुक्ति का अनुभव हो जायेगा' - ऐसा स्वामी रामतीर्थ बोलते थे। योगवासिष्ठ पर सत्संग बार-बार सुनते हैं, बार-बार मनन करते हैं, इसलिए साधकों के मन में शांति-आनंद रहता है।

''जिन्होंने विचार त्यागा है, वे माता के गर्भ में कीट होकर भी कष्ट से न छूटेंगे।''

जिन्होंने आत्मविचार त्यागा है, वे माताओं के गर्भ में कीड़े होते हैं, अंडे बनते हैं फिर भी दुःखों से नहीं छूटते। इसलिए आत्मविचार खूब करना चाहिए।

आत्मविचार करें, आत्मा में शांति पायें तो फिर आत्मविचार भी शांत हो जाता है। फिर मन इधर-उधर जाय तो फिर से उसे घुमा-फिराकर आत्मा-परमात्मा में लायें... मंगल-ही-मंगल हो जाय, कल्याण-ही-कल्याण हो जाय। ❑

एकै साधे सब सधै

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।

उस एक आत्मदेव को रिझा लो । एक आत्मदेव का चिंतन, एक आत्मदेव का ज्ञान, एक आत्मदेव की प्रीति, एक आत्मदेव की प्राप्ति का उद्देश्य बनाओ। प्रकृति आपके अनुकूल हो जायेगी, देवता अनुकूल हो जायेंगे, यक्ष-गंधर्व-किन्नर अनुकूल हो जायेंगे, दिशाएँ अनुकूल हो जायेंगी, वायु अनुकूल हो जायेगी, जल अनुकूल हो जायेगा, अग्नि अनुकूल हो जायेगी क्योंकि सब भगवान के उपजाये हुए हैं। पूरे चतुर्मास में भरपूर सत्संग ! एक भी सत्संग स्थगित नहीं हुआ, विफल नहीं हुआ - यह जल देवता, वायु देवता का प्रत्यक्ष सहयोग है। प्रधानमंत्री के साथ जिसका तालमेल हो गया, उससे बाकी के विभागवाले अच्छा ही व्यवहार करेंगे।

यमुना किनारे एक बाबा झोंपड़ी बनाकर भजन करते थे। एक दिन बाबा को आ गयी मौज। वे अमरूद के २५-५० पौधे ले आये और बालू में थोड़े गड्ढे करके लगा दिये। एक किसान का लड़का वहाँ से बैल लेकर जा रहा था। बाबा बोले : ''ऐ लड़के ! इधर से मत आना, उधर से जा।''

लड़का बोला : ''बाबा ! क्यों ?''

''देखता नहीं, मैंने बगीचा लगाया है !''

''अरे महाराज ! यहाँ कोई बगीचा लगता है ! यमुनाजी की बालू में अमरूद के पौधे लगा दिये ! हम तो रोज यहीं से बैल ले जाते हैं, ले जायेंगे।''

''अरे ! तू वहाँ से ले जा।''

''नहीं, हम तो यहीं से ले जायेंगे।''

''मैं नहीं जाने दूँगा।''

''अरे, कैसे नहीं जाने देंगे !''

लड़का जरा उच्छृंखल था। उसने उठाया डंडा और मारने के लिए हाथ ऊपर किये तो हाथ ऊपर ही रह गये, नीचे नहीं हुए। देखते-देखते लोगों ने गाँववालों को बुलाया। देखा तो लड़का परेशान ! लड़का नीचे गिर पड़ा, बैल बेहोश होकर गिर पड़े। गाँववालों, परिवारवालों ने महाराज को प्रार्थना की। महाराज ने भगवान को, वायुदेव को प्रार्थना की, फिर लड़के और बैल में प्राण-संचार हुआ और वे खड़े हुए। कुछ समय के बाद वे पौधे बड़े हुए, फले और आज वे मीठे-मीठे अमरूद गाँववाले प्रसादरूप में ले जाते हैं।

अखंडानंद महाराज ने उन संत से पूछा कि ''महाराज ! उसने जब आपको मारने के लिए डंडा उठाया तो क्या आपने कोई मंत्र पढ़ा, कोई योगशक्ति चलायी ? क्या हुआ कि उसके हाथ रुक गये ?''

बाबा बोले : ''भाई ! हमने तो कुछ नहीं किया लेकिन यह समझो कि जो परब्रह्म परमात्मा में प्रतिष्ठित होता है, पाँच भूत उसके अनुरूप हो जाते हैं। तो वायु देवता हमारे सहयोग में आ गये। वायु देवता के कारण ही प्राण स्तम्भित हो गये, लड़का गिर गया, बैल गिर गये। फिर हमने प्रार्थना की और वायुदेव ने सहयोग कर दिया तो वे उठ खड़े हुए।''

जो ब्रह्म-परमात्मा में टिकता है, उसके लिए तो पाँच भूत सहयोगी हो ही जाते हैं, साथ ही जिनमें सात्त्विक अंश सुविकसित है, ऐसे लोगों के लिए भी पाँच भूत सहयोगी हो जाते हैं। □

हे परमात्मा ! हमारे अंतर में तुम्हारा ज्ञान-प्रकाश हो

(पूज्य बापूजी की पावन अमृतवाणी)

यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत ।
स नः पर्षदति द्विषः ॥

'इस रजोगुण से परे जो यह शुद्ध तेजस्वरूप परमात्मा प्रकट हुआ है, वह हमें द्वेष-वृत्तियों से पार करे ।' **(ऋग्वेद : १०.१८७.५)**

व्यष्टि व समष्टि का मेल गुणों के कारण डगमगा जाता है । यह त्रिगुणमयी माया व्यष्टि (जीवात्मा) को समष्टि (परमात्मा) से मिलने में बाधा डालती है परंतु भगवान श्रीकृष्ण का वचन है :

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।
(गीता : १५.७)

जीवात्मा परमात्मा का ही सनातन अंश है। अंश अंशी से भिन्न नहीं होता । जो परमात्मा की जाति है वही जीवात्मा की जाति है ।

मानव तुझे नहीं याद क्या तू ब्रह्म का ही अंश है ।
कुल गोत्र तेरा ब्रह्म है सद्ब्रह्म का तू वंश है ॥

परमात्मा से इतनी घनिष्ठ एकता होते हुए भी मनुष्य दर-दर की ठोकरें खाता है । अपने निजस्वरूप में तन्मय नहीं हो पाता । इसका कारण गुणों का संग ही है । तमोगुण तो घोर प्रमाद, आलस्य और जड़ता का कारण है । जगत को शून्यता की ओर ले जानेवाला है । रजोगुण इस संसार को क्रियाशील रखनेवाला है और साथ ही लोभ, मोह, राग-द्वेष, सुख-दुःख, हर्ष-शोक आदि द्वन्द्वों से युक्त है ।

कभी मनुष्य तमोगुण में बँधकर प्रमाद में गिरता है । कभी रजोगुण से एकतान हो के प्रवृत्ति-परायण हो के भोगों में फँसकर उछल-कूद मचाता है और कभी सत्त्वगुण से प्रभावित हो के निवृत्ति-परायण होकर चिरस्थायी शांति की ओर अग्रसर होता है । रजो-तमोगुण के मिश्रण से कभी तो प्रवृत्ति-परायणता में, कभी हिंसा में, कभी आलस्य-निद्रा में तो कभी शोक, मोह और राग-द्वेष के चक्करों में फिरता रहता है ।

जिस मनुष्य के चित्त में द्वेष अपना साम्राज्य फैलाता है वह मृदु से कठोर हो जाता है । न्याय की आकांक्षा होते हुए भी खुद अन्याय का आचरण करता है । धर्मभीरु धर्मभंजक बन जाता है । शांति का पुजारी अशांति में आनंद का उपभोग करने लग जाता है । अपनी अंदर की चाह से बिल्कुल विपरीत प्रवृत्ति करने लगता है । इनसे मुक्ति पाने के लिए रजो-तमोगुण से परे जो शुद्ध सत्त्वस्वरूप, अग्नि सदृश पावन, महान-से-महान और निर्मल ज्योतिस्वरूप परमात्मा है उसकी शरण ग्रहण करें । वह ज्योतियों की ज्योति, सबका प्रकाशक, सबका आधार परमात्मा हमें द्वेष से ऊपर उठाये । हमें उससे विमुक्त द्वन्द्वातीत आनंद में स्थिर करे । राग-द्वेष से हमारे अंतःकरण की योग्यताएँ क्षीण होती हैं । उनसे विमुक्त करके सत्स्वरूप में, चित्स्वरूप में, आनंदस्वरूप में हे प्राणाधार परमात्मा ! हमें स्थित करो । सच्चिदानंदस्वरूप अपने-आपको भूलकर हमने बहुत दुःख उठाये हैं । हमने बहुत चोटें खायी हैं । अब हमें अनुपम, अपूर्व शांति का उपभोग करना है ।

हे निर्मल शुद्धस्वरूप परमात्मा ! हमारे अंतर में तुम्हारा ज्ञान-प्रकाश हो । बाहर हम उसी प्रकाश में चलते रहें और शीघ्रातिशीघ्र तुम्हारे निकट हो जायें । ❑

कर्म का फल भोगना ही पड़ता है

(पूज्य बापूजी की पावन अमृतवाणी)

जीवात्मा न जाने किस-किस जन्म में क्या-क्या दुःख भोग के आया है। सुख के लिए उसने अपने लिए क्या-क्या बंधन बढ़ा दिये।

वैष्णव सम्प्रदाय के संत जम्भेश्वरजी ने अपने भक्तों को बीस और नौ नियम दिये। उन भक्तों की परम्परा का सम्प्रदाय चला 'बिश्नोई सम्प्रदाय'। इसके संस्थापक जम्भेश्वरजी महाराज जाम्भोलाव तालाब खुदवा रहे थे। जैसलमेर नरेश रावल जेतसी भी उस सेवा में लगे थे। कुछ समझदार लोगों ने देखा कि एक महिला किसीसे कुछ बातचीत नहीं करती, सुबह आती है और शाम तक तालाब खोदने की सेवा करके चली जाती है। घूँघट में मुँह छुपाये रहती है और तालाब से मिट्टी निकालती है। उसका ऐसा व्यवहार देख जेतसी आदि प्रमुख लोगों ने जम्भदेवजी से पूछा कि ''यह घूँघटवाली महिला आखिर है कौन ?''

महाराज बोले : ''उस महिला के तीन जन्मों की बात मैं तुमको सुनाता हूँ। अब से तीन जन्म पहले यह मथुरा नरेश की पटरानी 'आशा' थी। मथुरा नरेश भोगी होने के कारण जल्दी मर गया और पटरानी को राजसत्ता मिली।

मिले हुए पद को यदि दूसरों के हित में लगाते हैं तो उन्नति होती है लेकिन पद का दुरुपयोग करते हैं तो प्रकृति की व्यवस्था उसका पतन करती है, बाहर का कोई दंड मिले चाहे न मिले। जिसे जो चीज, जो पद मिला है, उसका दुरुपयोग करने से उसका पतन होता है। जिसको जो पद मिला है, यदि वह उसका ठीक से निर्वाह नहीं करता है तो उस पद से उसको हटाया जाता है। यह प्रकृति का नियम है।

राज्य सँभालने की सेवा मिली थी लेकिन लोभी रानी ने क्या किया कि एक बार गुजरात से कुछ लोग तीर्थयात्रा करने गये। वे बड़े धनवान सेठ-साहूकार भक्त थे। उनके पास सीधा-सामान के साथ-साथ चाँदी के रुपये, सोने की अशर्फियाँ, हीरे-मोती आदि भी थे। वहाँ के चुंगीवालों ने, स्वार्थी अधिकारियों ने उन लोगों से 'मथुरा में प्रवेश का टैक्स होता है, यह होता है, वह होता है...' बताकर कर (टैक्स) के रूप में उनका कुछ धन लूटा।

यात्री बोले : 'हम लोग तो तीर्थयात्री हैं, कोई व्यापार करने को नहीं आये हैं।'

राजकर्मचारियों ने रानी को सारी बात बतायी। रानी ने आज्ञा दी कि 'ये तीर्थयात्री नहीं बनावटी भक्त हैं, इनसे धन लूट लो।'

तीर्थयात्रियों की तो सेवा करनी चाहिए लेकिन उस लोभी रानी ने मथुरा में, वृंदावन में तीर्थयात्रियों के ऊपर कर लगाकर लूट चलायी।''

जैसे अभी भी कोई हज करने जाता है तो उसको जहाज के टिकट में बीसों हजार रुपये सब्सिडी मिलती है और हिन्दू अमरनाथ की यात्रा करने जाते हैं तो उन पर हजारों रुपया टैक्स लगाते हैं। आश्चर्य होता है कि हमारे हिन्दुस्तान की सरकार ऐसा क्यों करती है ! लोगों को यह बात समझ में नहीं आती कि हिन्दुओं के साथ ऐसा सौतेला व्यवहार क्यों किया जाता है ? कहीं-कहीं पर तो कितना

टोल टैक्स होता है ! बद्रीनाथ के रास्ते पर देखो। पहले तो बहुत था, अब कुछ कम हुआ। ऐसा क्यों करते हैं ? अन्य कई आय के साधन हैं। धर्म के रास्ते जानेवाले लोगों पर टैक्स डालकर ये प्रजा को क्यों दुःखी करना चाहते हैं ? प्रजा की बददुआ क्यों लेना चाहते हैं ? मैं तो चाहता हूँ कि मेरी यह बात दूर तक पहुँचे और हजारों रुपये जो कर के रूप में वसूले जाते हैं, उस पर सरकार ध्यान दे ताकि आनेवाले दिनों में सरकार को घाटा न पड़े। किसी भी पार्टी की सरकार हो, हम सभीका मंगल चाहते हैं, भला चाहते हैं।

मैं तो चाहता हूँ कि हिन्दुओं को सौतेला मत मानो। हिन्दू संस्कृति रहेगी तो हिन्दू भगवानों के अवतार होंगे और मानवता का भला होगा। और किसी संस्कृति में ऐसी व्यवस्था नहीं है जो भगवान को प्रकट कर सके। हिन्दुओं को अपना मानो, मुसलमानों को भी अपना मानो, ईसाइयों को भी अपना मानो - सभी प्राणियों को अपना मानो। 'वे अपने, ये पराये' - ऐसा न करो।

सब तुम्हारे तुम सभीके,
फासले दिल से हटा दो।

जम्भेश्वरजी महाराज ने कहा कि ''मथुरा की उस रानी ने अन्याय के धन से अपनी तिजोरी भरी और मरनेवाले शरीर को सुखी करने के लिए वे पैसे ऐश-आराम में, भोग-विलास में लगाये। मरने के बाद वह रानी गधी हो गयी।

प्रकृति ने खूब डण्डे मार के उससे वसूली की। जब वह बूढ़ी हो गयी, चलने में लाचार हो गयी तो कौए उसको चोंच मारते। बड़ा दुःख भोगा उसने। रानी होकर तो मजा लिया था, अब मजा का बदला सजा भोग !

कुछ समय बाद गधी की मौत हो गयी। एक बूढ़े के घर में खच्चरी के रूप में उसे जन्म मिला। गधी उसकी माँ और घोड़ा उसका बाप। बूढ़ा उस पर पानी के मटके लाद के प्याऊ पर पानी पहुँचाता। लोगों को पानी पिलाने की सेवा में खच्चरी का थोड़ा श्रम लगा, जिससे कुछ पुण्य का भाग उसको मिला। उसके खोटे कर्म कट गये। वही खच्चरी मरकर अभी यह महिला बनी है और मिट्टी उठाकर अपने कर्म काट रही है।''

नरेश रावल जेतसी देखकर दंग रह गया कि कर्म की गति कैसी है ! राज्यसत्ता मिलती है तो धर्म का आश्रय लेकर प्रजा की सेवा करनेवाले लोग तो अपना इहलोक, परलोक सँवार लेते हैं लेकिन प्रजा से कर लेकर जो ऐश-आराम करते हैं, मौज उड़ाते हैं वे मरने के बाद गधे भी होते हैं, खच्चर भी होते हैं, बिलार भी होते हैं, पिशाच भी होते हैं, गिरगिट भी हो जाते हैं। राजा नृग मरने के बाद गिरगिट हो गये थे, राजा अज मरने के बाद साँप हो गये थे।

तो आपके जीवन में कितनी ज्यादा चीजें हैं, कितनी ज्यादा सहूलियत है, लोग आपको सलाम मारते हैं, इसका महत्त्व नहीं है लेकिन मरने के बाद आपकी कैसी गति होगी, इसका महत्त्व है। उसका ख्याल रखकर जीना। मथुरा की पटरानी जैसी गलती मत करना।

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।

(नारद पुराण, पूर्व भाग : ३१.७०)

शुभ और अशुभ कर्मों का फल जरूर, जरूर, जरूर भोगना पड़ता है। कर्म करनेवाला शुभ-अशुभ जो भी कर्म करता है, देर-सवेर उसका फल भोगता है। इसलिए अच्छे कर्म भगवान को अर्पण कर दो और बुरे कर्म से अपने को बचाओ तो बदले में भगवत्प्राप्ति हो जाय, नहीं तो नीच-ऊँच योनियों में भटक-भटक के जीव की दुर्गति होती रहती है। ❑

सहजता की आड़ में भ्रमित न हों

शास्त्रों में पढ़ने को मिलता है और ज्ञानी महापुरुष भी कहते हैं कि सहज जीवन जीना चाहिए । संत कबीरजी ने भी कहा है : **साधो सहज समाधि भली ।** काम करने की इच्छा हुई तो काम किया, भूख लगी तो भोजन किया, नींद आयी तो सो गये । जीवन में कोई टेन्शन (तनाव) नहीं होना चाहिए । आजकल के अधिकांश रोग तनाव के ही फल हैं... ऐसा मनोवैज्ञानिक कहते हैं । - ऐसा तर्क देकर भी कई लोग अपने काम-विकार की तृप्ति को सहमति दे देते हैं किंतु यह स्वयं को धोखा देने जैसा है । ऐसे लोगों को खबर ही नहीं है कि सहज जीवन तो ज्ञानी महापुरुषों का ही होता है, जिनके मन और बुद्धि अपने नियंत्रण में होते हैं, जिनको संसार में अब कुछ भी पाना नहीं है, जिन्हें मान-अपमान की चिंता नहीं होती है । वे उस आत्मतत्त्व में स्थित होते हैं, जहाँ न पतन है न उत्थान । उनको सदैव मिलते रहनेवाले आनंद में अब संसार के विषय न तो वृद्धि कर सकते हैं न कटौती । विषय-भोग उन महान पुरुषों को आकर्षित करके अब बहका या भटका नहीं सकते । इसलिए अब उनके सम्मुख भले ही विषय-सामग्रियों का ढेर लग जाय किंतु उनकी चेतना इतनी जागृत होती है कि वे चाहें तो उनका उपयोग करें और चाहें तो ठुकरा दें । बाहरी विषयों की बात छोड़ो, अपने शरीर से भी उनका ममत्व टूट चुका होता है । शरीर रहे अथवा न रहे - इसमें भी उनका आग्रह नहीं रहता । वे स्वयं को हर समय आनंदस्वरूप अनुभव करते रहते हैं । ऐसी अवस्थावालों के लिए कबीरजी ने कहा है :

साधो सहज समाधि भली ।
गुरु परताप जा दिन से जागी,
दिन दिन अधिक चली ॥

अपने को तौलें

हम यदि ऐसी अवस्था में हैं तब तो ठीक है, अन्यथा ध्यान रहे, ऐसे तर्क की आड़ में हम अपने को धोखा देकर अपना ही पतन कर डालेंगे । कोई अपमान कर दे तो हम क्रोधित हो उठते हैं, बदला तक लेने को तैयार हो जाते हैं । हम लाभ-हानि में सम नहीं रहते हैं । राग-द्वेष हमारा जीवन है । 'मेरा-तेरा' भी वैसा ही बना हुआ है । 'मेरा धन... मेरा मकान... मेरी पत्नी... मेरा पैसा... मेरा मित्र... मेरा बेटा... मेरी इज्जत... मेरा पद...' ये सब सत्य भासते हैं कि नहीं ? यही तो देहभाव है, जीवभाव है । हम इससे ऊपर उठकर व्यवहार कर सकते हैं क्या ? यह जरा सोचें ।

हम अपने साधारण जीवन को ही सहज जीवन का नाम देकर विषयों में पड़े रहना चाहते हैं । ये कोई सहज जीवन के लक्षण हैं, जिसकी ओर ज्ञानी महापुरुषों का संकेत है ? नहीं ।

मनोनिग्रह की महिमा

आजकल के युवक-युवतियों के साथ बड़ा अन्याय हो रहा है । उन पर चारों ओर से विकारों को भड़कानेवाले आक्रमण होते रहते हैं । एक तो वैसे ही अपनी पाशवी वृत्तियाँ यौन उच्छृंखलता की ओर प्रोत्साहित करती हैं और दूसरा, सामाजिक परिस्थितियाँ भी उसी ओर का आकर्षण बढ़ाती हैं । इस पर उन प्रवृत्तियों को वैज्ञानिक समर्थन मिलने लगे और संयम को हानिकारक बताया जाने लगे... कुछ तथाकथित आचार्य भी फ्रायड जैसे नास्तिक व अधूरे मनोवैज्ञानिक के व्यभिचारशास्त्र को आधार बनाकर 'सम्भोग से समाधि' का उपदेश देने लगें,

तब तो ईश्वर ही ब्रह्मचर्य व दाम्पत्य जीवन की पवित्रता के रक्षक हैं।

१६ सितम्बर १९७७ के 'न्यूयॉर्क टाइम्स' में छपा था : 'अमेरिकन पेनल कहती है कि अमेरिका में दो करोड़ से अधिक लोगों को मानसिक चिकित्सा की आवश्यकता है।'

उपरोक्त परिणामों को देखते हुए अमेरिका के एक महान लेखक, सम्पादक और शिक्षा विशारद श्री मार्टिन ग्रोस अपनी पुस्तक 'The Psychological society' में लिखते हैं : 'हम जितना समझते हैं, उससे कहीं ज्यादा फ्रायड के मानसिक रोगों ने हमारे मानस और समाज में गहरा प्रवेश पा लिया है। यदि हम इतना जान लें कि उसकी बातें प्रायः उसके विकृत मानस का ही प्रतिबिम्ब हैं और उसके मानसिक विकृतियोंवाले व्यक्तित्व को पहचान लें तो उसके विकृत प्रभाव से बचने में सहायता मिल सकती है। अब हमें फ्रायड की छाया में बिल्कुल नहीं रहना चाहिए।'

संस्मरणीय उद्‌गार

आपका मंत्र है : 'आओ, सरल रास्ता दिखाऊँ राम को पाने के लिए'

''पूज्य बाबा आसारामजी बापू ! आपका नाम आसारामजी बापू इसलिए निकला है क्योंकि आपका यही मंत्र है कि 'आओ, सरल रास्ता दिखाऊँ, राम को पाने के लिए।' आज हम धन्य हैं कि सत्संग में आये। सत्संग उसे कहते हैं जिसके संग में होकर हम 'सत्' हो जायें। पूज्य बापूजी ने हमें भगवान को पाने का सरल रास्ता दिखाया है, इसलिए मैं जनता की ओर से बापूजी का धन्यवाद अदा करता हूँ।''

– श्री ई.एस.एल. नरसिम्हन
राज्यपाल, छत्तीसगढ़। ❑

हे सद्‌गुरु माता !

हे सद्‌गुरु माता ! तुम-सा न कोई दाता॥
सकल जगत तेरी कोख से उपजा।
तुम माता के भी माता ॥
देनेवाले तुमसे लेते।
हे प्रभु ! तुम हो ऐसे दाता ॥ हे सद्‌गुरु माता !...
सारा जग जीवन पा तुमसे।
तुझमें सकल समाया है ॥
सबमें एक नूर है तेरा।
अजब की तेरी माया है ॥ हे सद्‌गुरु माता !...
निर्भयता निर्भार अवस्था।
तेरे दर पे बँटता है॥
निर्बल बल और रुग्ण स्वास्थ्य।
पाकर ही दर से हटता है॥ हे सद्‌गुरु माता !...
मूरख ज्ञानी बने अनेकों।
निर्धन भी धन पाये हैं ॥
रोग, शोक, संताप, पाप सब।
तुमने सबके मिटाये हैं ॥ हे सद्‌गुरु माता !...
माँ से सौ गुन हरि का दर्जा।
हरि से सौ गुना तेरा ॥
हे गुरुवर ! तुम ज्ञान दीप हो।
तुम बिन जगत अँधेरा ॥
बापू ! तुम बिन जगत अँधेरा ॥ हे सद्‌गुरु माता !...

– बाबा रामदास
मिर्जापुर (उ.प्र.)। ❑

संत के अपमान का फल

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

सेमीका महर्षि का आज्ञाकारी शिष्य था गौरमुख। मन में सुख आये तो उसको देखे, दुःख आये तो देखे, बीमारी आये तो देखे, तंदुरुस्ती आये तो देखे - इन सबको जाननेवाला जो परमात्मा है वही मेरा आत्मा है और वह सर्वव्यापक है। सद्गुरु से ऐसी ऊँची साधना सीखकर गौरमुख एक जंगल में आश्रम बनाकर रहता था।

गौरमुख के शिष्य वेदपाठ करते समय कभी गलती से कोई स्वर गलत उच्चारित कर देते तो चैतन्य परमात्मा पक्षियों के मुख से वेदोच्चारण की गलती ठीक करवा देते, सुधरवा देते थे। उनकी गुरुभक्ति का प्रभाव ऐसा था।

एक दिन क्या हुआ, उस देश का राजा दुर्जय विचरण करता हुआ वहाँ आया। गौरमुख ने देखा कि राजा ने अपने पूरे सैन्यसहित मेरे आश्रम में प्रवेश किया है।

गौरमुख ने कहा : ''राजन्! आपका स्वागत है, आपकी सेना और सेनापतियों का भी स्वागत है।'' राजा दुर्जय सेनासहित महर्षि के विशाल आश्रम में प्रविष्ट हुआ।

अपनी सेना, अंगरक्षकों और दर्जनों बंदूकधारियों को लेकर किसी संत के पास जाना, संत की कुटिया की तरफ घुसना, यह नीच बुद्धि का परिचायक है।

हकीकत में गौरमुख को कहना चाहिए था कि 'राजन्! आप आये तो अच्छी बात है लेकिन सेना की इस आश्रम में जरूरत नहीं है। सेना आश्रम के बाहर होनी चाहिए थी। खैर, आ गयी है तो ठीक है। आप इन्हें आज्ञा कर दीजिये कि बाहर विश्राम करें।' स्वागत है बोल दिया तो उनके खाने-पीने की, रहने की व्यवस्था का जिम्मा सिर पर आ गया। गौरमुख ने सोचा कि 'मैंने स्वागत किया है तो अब इनके खाने-पीने, रहने की व्यवस्था भी तो मुझे करनी पड़ेगी।'

उसने भगवान विष्णु का चिंतन किया और प्रार्थना की 'हे प्रभु! अब क्या करूँ ? दुर्जय राजा सेनासहित आये हैं, उनका स्वागत करना है।' अपने लिए कुछ न माँगनेवाले, निर्दोष गौरमुख की प्रार्थना पर सोऽहं स्वभाव अंतर्यामी परमेश्वर ने उसके आगे प्रकट होकर उसे चिंतन करनेमात्र से कार्यसिद्धि प्रदान करनेवाली चिंतामणि दी और कहा कि ''तुम इसके आगे जो भी चिंतन करोगे, चाहोगे उसकी सब व्यवस्था चिंतामणि कर देगी।''

गौरमुख ने चिंतामणि के सामने बैठकर कहा : ''हे नारायण की दी हुई प्रसादी! मेरे आश्रम में इन सेनापतियों के रहने योग्य जगह बन जाय और सेना के योग्य भोजन बन जाय। घोड़ों के लिए दाना, हाथियों के लिए चारा और राजा के लिए उनके अनुरूप निवास व भोजन बन जाय।''

गौरमुख चिंतामणि के आगे चिंतन करते गये और खूब सारी व्यवस्था हो गयी। यह देखकर दुर्जय राजा दंग रह गया। इतनी आवभगत करनेवाले मुनि को मस्का मारते हुए राजा ने कहा : ''मुनि! आपने हमें स्वागत-सत्कार से खूब प्रसन्न किया है। आप भी कभी हमारे अतिथि बनिये।''

अब मेहमान बनाकर वह अपना अहंकार

दिखाना चाहता था । इन्होंने तो अतिथि समझकर उसका स्वागत किया लेकिन उस अहंकारी राजा की नीयत खराब हो गयी। अगले दिन जब राजा सेनासहित वहाँ से जाने लगा तो मणि की बनायी हुई सभी चीजें गायब हो गयीं । यह सब सम्भव है। ऐसे संतों के बारे में मैंने सुना है। समर्थ रामदासजी और तुकारामजी भी सब प्रकट कर देते थे। भारद्वाज ऋषि ने भी भरत के स्वागत में उनके साथ आयी हुई सारी जनता का यथायोग्य स्वागत करनेवाली सामग्री प्रकट कर दी थी। अभी भी ऐसे सिद्धपुरुष हैं, जो अपने शिष्यों के साथ विचरण करते हैं और जहाँ मौज आ गयी वहाँ शिष्यों को कहते हैं, 'यहाँ लगा लो तम्बू।' सारी व्यवस्था हो जाती है, सारी चीजें आ जाती हैं और जितने दिन रहना है रहे, फिर गुरुजी बोलते हैं, 'चलो !' जब वहाँ से चलते हैं तो सारी सामग्री पंचभूतों में विलय हो जाती है। ऐसे महापुरुष से मेरी मुलाकात हुई थी, जिनके लिए स्वयं नर्मदाजी भोजन लेकर आती थीं।

राजा उस मणि की शक्ति को देख आश्चर्यचकित रह गया। दुर्जय की दुर्मति ने मंत्री को आज्ञा दी : ''जाओ ! गौरमुख को बोलो कि चिंतामणि हमें दे दे। वह चिंतामणि बड़ी प्रभावशाली है। उस साधु को क्या जरूरत है उसकी !''

हरामी लोग साधु को तो कंगला देखना चाहते हैं और सब चीजें अपने अधीन करना चाहते हैं। भगवान के भक्त और प्यारों को पराधीन रखना चाहते हैं और वे अहंकारी, घमंडी आतंकवादियों से डरते रहते हैं।

गौरमुख ने मंत्री को संदेश देकर वापस भेज दिया कि 'भगवान के द्वारा दिया गया ऐसा उपहार स्वार्थपूर्ति के लिए नहीं होता। उसका उपयोग केवल समाजहित के लिए ही होना चाहिए।'

संदेश सुनकर राजा बहुत क्रोधित हुआ और उसने गौरमुख के आश्रम में अपनी सेना भेजकर मणि को बलपूर्वक लाने की आज्ञा दी।

गौरमुख ने देखा कि राजा आतंकी हो रहा है, पोषक शोषक हो रहा है तो उन्होंने भगवान से प्रार्थना की : 'हे नारायण ! रक्षमाम्... रक्षमाम्...! प्रभुजी ! यह क्या हो रहा है ? यह सैन्य अंदर घुस रहा है !... प्रभु ! अपने सैन्य से ठीक करा दो।'

उन्होंने चिंतामणि के आगे अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित एक विशाल सेना का चिंतन किया और वह प्रकट हुई, जिससे निमेष भर में दुर्जय का सैन्य धूल चाटता हुआ चला गया। जब दुर्जय और उसके खास मंत्री सैनिकों के साथ गौरमुख के आश्रम पर पहुँचे तब गौरमुख ने भगवान नारायण का पुनः स्मरण किया। ईश्वरीय सत्ता ने मात्र एक निमेष (एक बार पलक झपकने में जितना समय व्यतीत होता है) में सुदर्शन चक्र द्वारा सेनासहित दुर्जय को नष्ट कर डाला।

भगवान बोले : ''महर्षि ! इस वन में सारे दुष्ट एक निमेष में ही नष्ट हो गये हैं इसलिए लोग इसे 'नैमिषारण्य क्षेत्र' के नाम से जानेंगे। इस पुण्यभूमि में ऋषियों, मुनियों का समुचित निवास होगा और सत्संग, ज्ञानचर्चा व ध्यान-उपासना होगी।''

तब से उस जगह का नाम 'नैमिषारण्य' पड़ा। यह वही जगह है जहाँ सूतजी ने शौनकादि महामुनियों को 'श्रीमद् भागवत' सुनाया।

नैमिषारण्य आज भी हमें संदेश देता है कि जो अपनी शक्ति का अहंकार व योग्यता का दुरुपयोग करके महापुरुषों का अपमान करता है, उसका दैत्यों, मानवों और देवताओं पर भी विजय प्राप्त करनेवाले महाप्रतापी राजा दुर्जय की तरह निश्चित ही सर्वनाश होता है। ❒

भगवान की शरण

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

भगवान की शरण जाओ। ईश्वर की शरण के सिवाय कोई चारा नहीं सुना है। ईश्वर भी कहते हैं :

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥

'यह अलौकिक अर्थात् अति अद्‌भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है परंतु जो पुरुष केवल मुझको ही निरंतर भजते हैं, वे इस माया का उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसार से तर जाते हैं।'

यह जो माया है बड़ी दुस्तर है, इसको तरना बड़ा कठिन है। असम्भव नहीं कठिन है। यह तीन गुणवाली है। तामसी आदमी अपना बिगाड़ करके भी दूसरे का बड़ा बिगाड़ करने में खुश होगा। आलस्य, निद्रा, शराब-कबाब में, कलह में वह मजा लेगा - वह माया के तामसी गुण में बँधा है। राजसी आदमी भोग में, संग्रह में - माया के रजोगुण में बँधा है, मरनेवाले शरीर की सुख-सम्पत्ति और मान-प्रतिष्ठा में अपना जीवन खपा देता है मूर्ख! सात्त्विक आदमी होम-हवन, यज्ञ-याग किया, दान-पुण्य यह-वह... अच्छा काम किया और लोग बोल रहे हैं : 'अच्छे हैं, नेक हैं, आहा...' बोले : 'अच्छा है, अपना घर है, बेटे वेल-सेट हैं, बेटी का विवाह करा दिया, भगवान की दया है मुझ पर...' वह सात्त्विक व्यक्ति इन्हींमें बँधा है, फँसा है। यह माया का गुण है। कोई स्वर्ग और बिहिश्त का सपना लेकर बैठा है : 'बस... संतुष्ट हूँ।' वह माया के सत्त्वगुण अंश में फँसा है। तो यह माया है, इससे तरना दुस्तर है लेकिन जो भगवान की शरण आता है वह तर जाता है। भगवान ने भी कहा :

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।

अब एकनाथजी महाराज कहते हैं कि ''मेरे विट्ठल! मेरे प्रभु!! तुम्हारी शरण क्या है? क्या मैं हिमालय में चला जाऊँ - यह तुम्हारी शरण है? या गुफा में समाधि लगाऊँ तो तुम्हारी शरण है? अथवा पंढरपुर में तुम्हारी आरती-पूजा करता रहूँ - यह तुम्हारी शरण है? आप ही बताओ आपकी शरण क्या है?''

भगवान की शरण जाना चाहिए, गुरु की शरण जाना चाहिए... 'शरण' तो नाम सुन लिया। चित्रकारों ने कल्पना करके भगवान का जो चित्र बनाया और उस चित्र पर से चित्र लेकर जो फोटो छपे और हमारे घर आये, क्या उस फोटो के पैर पकड़ के बैठना भगवान की शरण है? अथवा उस फोटो को देखकर किसीने पत्थर में से भगवान का श्रीविग्रह बनाया, उनको हम प्रणाम तो करते हैं, पूजा भी करें अच्छा है तो क्या उस जयपुर से लाये हुए श्रीविग्रह के, जिसमें प्राण-प्रतिष्ठा कर दी, उसके पैर पकड़ के बैठना भगवान की शरण है? भगवान की किसी धातु से अथवा पत्थर से बनी हुई मूर्ति अथवा यरूसलेम में रखे हुए उस पत्थर को पकड़ के आलिंगन करके बैठना खुदा की शरण है क्या, भगवान की शरण है क्या?

अगर मूर्ति के पैर पकड़ के बैठना या श्रीविग्रह के पैर पकड़ के बैठना ही भगवान की शरण है तो पकड़ ले पैर, छुट्टी हो जाय, कल्याण हो जाय। संत एकनाथजी महाराज एकांत में अंतर्यामी ईश्वर से वार्ता, ईश्वर-चिंतन, ईश्वर-पुकार करते-करते

शांत हो गये तो उन संत को मानो उस सच्चिदानंद ने, उस परमेश्वर ने, उस गुरुतत्त्व ने, जिसमें उनकी स्थिति हुई, यह स्फुरना दिया कि एक संकल्प उठता है और दूसरा उठने को है, इसके बीच की जो संकल्परहित स्थिति है, वह सच्चिदानंद है। उस सच्चिदानंद में विश्रांति करना ईश्वर की शरण है। सुख और दुःख चले जाते हैं फिर भी जो नहीं जाता, उसमें स्थिति करना - यह ईश्वर की शरण है। अनुकूलता में हर्ष होता है और प्रतिकूलता में शोक होता है। हर्ष-शोक, राग और द्वेष मति के धर्म होते हैं। वह मति बदल जाती है, हर्ष-शोक बदल जाते हैं फिर भी हर्ष-शोक के समय उनको जो देखता है, हर्ष-शोक का जो साक्षी है उस परमात्मा में स्थिति करना - यह ईश्वर की शरण है।

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।

जैसे मछुआरा चारों तरफ जाल डालता है तो मछलियाँ देर-सवेर पकड़ी जाती हैं लेकिन जो मछली मछुआरे के पैरों में घूमती है, उसको मछुआरे का जाल नहीं पकड़ता है। ऐसे ही जो सच्चिदानंद के इर्द-गिर्द अपने चित्त को ले जाता है, वह इस माया के जाल से छूट जाता है। ❑

अद्वितीय है ऋषि प्रसाद

छोटी-सी अति रुचिर पत्रिका
जिससे मिटता है अवसाद।
अन्य नहीं वह अद्वितीय है
नाम है उसका 'ऋषि प्रसाद' ॥
'ऋषि प्रसाद' लेकर आती है
ऋषियों का पावन संदेश।
अनुशीलन इसका करने से
कटते भव के सारे क्लेश ॥
हो 'विचार मंथन' सम्यक् यदि
'आत्मप्रसाद' लगे मिलने।
कर 'मधुसंचय' 'स्वास्थ्य-अमृत' का
तन-मन लगता है खिलने ॥
'ज्ञान की गंगोत्री' से निकली
बापू की सत्संग सरिता।
पान 'कथा अमृत' का कर,
मन में मिलते हैं जगत पिता ॥
'ज्ञान दीपिका' हो प्रदीप्त तब
उर में हो 'साधना प्रकाश'।
'जीवन पथ-दर्शन' जब मिलता
निर्मल होता हृदयाकाश ॥
पा 'भागवत प्रसाद' कला
जीवन जीने की है आती।
'भक्तों के अनुभव' से श्रद्धा
सत्संग में दृढ़ हो जाती ॥
पढ़-पढ़कर 'प्रेरक प्रसंग'
प्रेरणा सभी पाठक पाते।
'नैतिक शिक्षा' से अपने
जीवन में नैतिकता लाते ॥
पा 'प्रसाद परमहंसों का'
ज्ञान-नेत्र खुलने लगते।
दुर्गुण दुराचार कम होते, राग-द्वेष सारे भगते ॥
'पर्व मांगल्य' हमें व्रत-पर्वों का
महत्त्व बतलाता है।
त्यौहारों के छिपे रहस्यों को
सबको समझाता है ॥
बापू हैं करुणानिधान, घर बैठे सत्संग देते हैं।
वाङ्मय रूप में दर्शन देकर
व्यथा सभी हर लेते हैं ॥
शब्द-शब्द से ज्ञान-भक्ति का
निर्झर झरता रहता है।
समझ के आत्मसात् जो करता
सुख-दुःख में सम रहता है ॥

– ओमप्रकाश मिश्र, अहमदाबाद। ❑

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

प्रश्न : भगवान की भक्ति और भक्तियोग में क्या फर्क है ?

उत्तर : भक्ति प्रारम्भिक अवस्था है । कोई धन का भगत, कोई पत्नी का भगत, कोई राष्ट्र का भगत है । भक्ति तो हर कोई कर सकता है । **राष्ट्रयोग नहीं होता, राष्ट्र की भक्ति होती है । भगवान का ही भक्तियोग होता है ।** तो भक्तियोग क्या होता है ? भगवान के ज्ञान को पाये हुए जो अनुभवसम्पन्न महापुरुष हैं, उनके प्रति जब हमारा सद्‌भाव होता है और उनकी कृपा, नूरानी निगाहें मिलती हैं तो हमको भगवद्रस आने लगता है और संसार का रस फीका लगने लगता है । तब भक्ति में से भक्तियोग हो जाता है ।

प्रश्न : भगवान कैसे हैं ?

उत्तर : भगवान शिव हैं कि पार्वती ? ऐसे हैं कि वैसे हैं ?... इस पचड़े में पड़ो ही मत ! सृष्टिकर्ता जैसे भी हों, हमको जन्म देनेवाले जैसे भी हों, हमारे कर्म का निर्णय करनेवाले, फल देनेवाले जो भी भगवान हों, जैसे भी हों, हम उनके हैं । जैसे गजेन्द्र (हाथी) ग्राह (मगर) के द्वारा पकड़ा गया । 'मैं कौन हूँ, भगवान कौन हैं, कैसे हैं - मैं नहीं जानता हूँ । जो कोई सृष्टिकर्ता हो, जो कोई भगवान हो, मैं उसकी शरण हूँ...' बस, हृदय की पुकार हुई और गजेन्द्र की रक्षा के लिए भगवान प्रकट हो गये । 'भगवान तुम ऐसे हो, भगवान तुम वैसे हो...' - यह अपनी भावना से करोगे तो भगवान उस भावना के अनुरूप होंगे, नहीं तो कह दो कि 'भगवान आप जैसे भी हों, हमें अपनी शरण लो ।'

मत करो वर्णन हर बेअंत है,
क्या जाने वो कैसो रे ।
तुमरी गति मिति तुम ही जानी ।
नानक दास सदा कुरबानी ।

प्रश्न : ईश्वर है इसका अकाट्य प्रमाण क्या है ?

उत्तर : ईश्वर है इसका अकाट्य प्रमाण है कि तुम हो । 'मैं हूँ कि नहीं ?' - ऐसा तुम कभी नहीं बोल सकते हो । चाहे मैं अमीर हूँ, गरीब हूँ, वकील हूँ, मैं सेठ हूँ, मैं माई हूँ, मैं भाई हूँ लेकिन मैं हूँ । तो 'मैं हूँ' जो है, यह 'हूँ' पना जहाँ से है, वह सदा रहता है । 'यह हूँ, वह हूँ... ' यह-वह बदलेगा लेकिन 'हूँ' रहेगा । तो ईश्वर के अस्तित्व का अकाट्य प्रमाण यही है कि तुम हो । तुम्हारा आत्मा होगा, तुम होगे तभी तो बोलोगे कि 'यह ईश्वर है ।' तो ईश्वर के द्रष्टा भी तुम्हीं बनोगे । तुम्हारे सिवाय ईश्वर दिखेगा तो किसको दिखेगा ? ईश्वर मिलेगा तो किसको मिलेगा ? अगर तुम नहीं हो तो ईश्वर किसको मिलेगा ? तो ईश्वर के होने का अकाट्य प्रमाण है कि तुम सदा हो - आदि में थे, अभी हो और बाद में भी रहोगे । अपने को नहीं जानते तो जन्म-मरण के फंदे में हो लेकिन तुम हो सही !

तो ईश्वर का मूल पता तुम्हारे अंतरात्मा तक आ जाता है और अंतरात्मा को ठीक से पहचान लो तो शरीर की बीमारी अपनी बीमारी नहीं लगेगी, मन का दुःख अपना दुःख नहीं लगेगा, चित्त की चिंता अपनी चिंता नहीं दिखेगी । हम इन सबको जाननेवाले हैं । हम हैं अपने-आप, हर परिस्थिति के बाप ! दुःख, चिंता, बीमारी का प्रभाव तुम पर न पड़े, मृत्यु का प्रभाव तुम पर न पड़े तो तुम मुक्त हुए कि नहीं हुए ? **(शेष पृष्ठ २५ पर)**

सृजनात्मक दिशा

हमारे शरीर का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग है मस्तिष्क। इसमें दो महत्त्वपूर्ण अंतःस्रावी ग्रंथियाँ हैं - पीनियल ग्रंथि तथा पीयूष ग्रंथि।

पीनियल ग्रंथि भ्रू-मध्य (दोनों भौंहों के बीच जहाँ तिलक किया जाता है) में अवस्थित होती है। योग में इस ग्रंथि का संबंध आज्ञाचक्र से है। यह ग्रंथि बच्चों में बहुत क्रियाशील होती है किंतु ८-९ वर्ष की उम्र के बाद इसका ह्रास प्रारम्भ हो जाता है और पीयूष ग्रंथि अधिक सक्रिय हो जाती है। इससे बच्चों के मनोभाव तीव्र हो जाते हैं। यही कारण है जिससे कई बच्चे भावनात्मक रूप से असंतुलित हो जाते हैं और किशोरावस्था में या किशोरावस्था प्राप्त होते ही व्याकुल हो जाते हैं तथा न करने जैसे काम कर बैठते हैं। पीनियल ग्रंथि के विकास तथा उसके क्षय में विलम्ब हेतु व पीयूष ग्रंथि के नियंत्रण हेतु ७-८ वर्ष की उम्र से बालकों में भगवन्नाम-जप, कीर्तन, मुद्राएँ, आज्ञाचक्र पर ध्यान आदि के अभ्यास के संस्कार डालना आवश्यक है। इनसे होनेवाले लाभ इस प्रकार हैं -

ज्ञानमुद्रा : हमारे दोनों अँगूठों के अग्रभाग में मस्तिष्क, पीयूष ग्रंथि और पीनियल ग्रंथि से संबंधित तीन मुख्य बिंदु हैं। इन बिंदुओं पर दबाव डाला जाय तो मस्तिष्क में चुम्बकीय प्रवाह बहने लगता है, जो कि मस्तिष्क तथा पीनियल ग्रंथि को अधिक क्रियाशील बनाता है। इससे स्मरणशक्ति, एकाग्रता व विचारशक्ति का विकास होता है। जब हम ज्ञानमुद्रा में बैठते हैं तब अँगूठे के इसी भाग पर तर्जनी का दबाव पड़ता है और उपर्युक्त सभी लाभ हमें सहज में ही मिल जाते हैं।

जप : माला पर भगवन्नाम-जप करने में अँगूठे और अनामिका से माला पकड़कर मध्यमा से घुमाने पर हर मनके का घर्षण उन्हीं बिंदुओं पर होता है।

कीर्तन : कीर्तन में दोनों हाथों से ताली बजाने पर हाथों के सभी एक्युप्रेशर बिंदुओं पर दबाव पड़ता है और हमारे शरीर के समस्त अवयव बैटरी की तरह ऊर्जासम्पन्न (रिचार्ज) होकर क्रियाशील हो उठते हैं। अंतःस्रावी ग्रंथियाँ भी ठीक से कार्य करने लगती हैं, रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ जाती है तथा रोग होने की सम्भावना कम हो जाती है। बालकों द्वारा एक साथ मिलकर प्रभु-वंदन और संकीर्तन करने में एक स्वर से उठी हुई तुमुल ध्वनियाँ वातावरण में पवित्र लहरें उत्पन्न करने में समर्थ होती हैं तथा इस समय मन ध्वनि पर एकाग्र होता है, जिससे स्मरणशक्ति तथा श्रवणशक्ति विकसित होती है। इसीलिए विद्यालयों में सम्मिलित भगवत्प्रार्थना को महत्त्वपूर्ण माना गया है।

आज्ञाचक्र पर ध्यान : ज्ञानमुद्रा में पद्मासन या सुखासन में बैठकर आज्ञाचक्र पर अपने इष्टदेव अथवा गुरुदेव का ध्यान करने का भी यही महत्त्व है। **ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः** - एकलव्य की सफलता का यह रहस्य सुप्रसिद्ध ही है। एकाग्रता अथवा ध्यान मन के उपद्रवों तथा चंचलताओं को समाप्त करने और उसकी शक्तियों को सृजनात्मक दिशा प्रदान करने में बड़ा सहायक होता है। ध्यान के द्वारा बुद्धि-गुणांक (I.Q.) का चमत्कारिक ढंग से विकास होता है, यह प्रयोगसिद्ध वैज्ञानिक तथ्य है। □

भगवान की आवश्यकता क्यों ?

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

आपको अपने जीवन में एक सबल सहारे की आवश्यकता है। ऐसा सबल सहारा जो आपको दुःखों के समय थाम ले और सुखों की आसक्ति में डूबने से बचा ले। जो आपको सत्प्रेरणा देने में समर्थ हो। आप अच्छा करते हों तो आपका बल बढ़ा दे, आप बुरा करते हों या गलती करते हों तो आपके दिल में आपको टोकने की ताकत रखे, ऐसे सबल सहारे की सबको आवश्यकता है। जिसको आवश्यकता नहीं लगती है, उसको भी आवश्यकता है, पक्की बात है ! ऐसा कौन-सा सबल सहारा है ?

अपने बॉस का सहारा लेनेवाला ऑफिस में मस्ती से रहता है। सेठ का सहारा लेने से नौकर खुशहाल रहता है। नेता का सहारा लेने से चमचों में दम आ जाता है लेकिन वह नेता की कुर्सी और सेठ का धन कब तक ? प्रलय हो जाय फिर भी जो सहारा आपसे छूटे नहीं, उस सहारे का नाम है 'परमात्मा' और वह आत्मरूप में सदैव हमारे साथ है।

मनुष्यमात्र शाश्वत सुख चाहता है। कोई कहे कि 'भगवान करे तुम दो महीने के लिए सुखी रहो, फिर तुम्हें मुसीबत मिले।' तो आप इन्कार करोगे। 'साल भर सुखी रहो फिर नरक में जाओ।' तो आप कहोगे, ना-ना। 'जियो तब तक सुखी रहो और बाद में नरकों में जाओ।' तो आप कहोगे, नहीं। आप यहाँ भी सुखी और मरने के बाद भी सुखी रहना चाहते हैं। तो प्राणिमात्र का उद्देश्य है सदा सुखी रहना क्योंकि सदा सुखस्वरूप जो परमात्मदेव है, उसीसे यह जीवात्मा स्फुरा है। परमात्मा की आवश्यकता इसलिए है कि हमें शाश्वत सुख चाहिए, शाश्वत सहायक चाहिए और नित्य प्रेम करनेवाला चाहिए। नित्य प्रेम पति-पत्नी नहीं कर सकते हैं। वे तो जवानी की अवस्था में काम-विकार भोगेंगे। लोभी सेठ और नौकर का प्रेम नित्य नहीं रह सकता। भाई-भाई का प्रेम नित्य नहीं रहेगा। शादी होने के बाद, बेटा-बेटी के जन्म के बाद बदल जायेगा। जीवात्मा-परमात्मा की जाति एक है, उनका प्रेम नित्य रहता है, बाकी का अनित्य है। शरीर अनित्य है तो उसके संबंध भी अनित्य हैं, उनका प्रेम भी अनित्य है लेकिन जीवात्मा नित्य है, परमात्मा नित्य है। इसीलिए नित्य जीवात्मा को परमात्मा की आवश्यकता है। नित्य जीवात्मा को नित्य प्रीति चाहिए, नित्य रस चाहिए, नित्य सुरक्षा करनेवाले समर्थ हाथ चाहिए। तो भगवान से बड़े समर्थ हाथ किसके हैं ! भगवान से बढ़कर जानकार कौन है !

भगवान नित्य सुखरूप हैं, आनंदरूप हैं, सर्वसमर्थ हैं और उनसे बढ़कर तुम्हारा कोई हितैषी नहीं है, दूरद्रष्टा नहीं है। बोले : 'भगवान हमारे हितैषी हैं तो पुजारी तो भगवान की पूजा कर रहा था और एक चोर घुस गया। उसने भगवान के मुकुट में जो मणि लगी थी लाखों रुपये की, वह चुरा ली। पुजारी ने कहा : "मेरे जीते-जी तू नहीं ले जा सकता !" पुजारी और चोर की लड़ाई हुई। चोर ने पुजारी को मार डाला और मुकुटमणि लेकर भाग गया। भगवान ने मदद कहाँ की !'

अरे, पुजारी की भगवान के प्रति प्रीति नहीं थी, मुकुटमणि के प्रति प्रीति थी। पुजारी का कहना था कि 'जब तक मैं जिंदा हूँ मुकुटमणि

नहीं ले जाने दूँगा ।' अब उसका इसी निमित्त मरने का प्रारब्ध होगा और इसी निमित्त चोर की आजीविका बननी होगी ।

माँ बच्चे का मंगल करती है न, कि अमंगल ! मार-पिटाई करती हुई दिखती है, इसमें भी बच्चे की भलाई है और कभी पुरस्कृत करती है, इसमें भी बच्चे की भलाई है । तो भगवान हमारा कब, किस रूप में, कैसे प्रारब्ध पूरा करते हैं, वह तो भगवान ही जानें । पुजारी की मौत इस निमित्त थी तो भगवान ने उसका प्रारब्ध यूँ पूरा किया । इससे पुजारी क़ी सद्‌गति होगी क्योंकि आगे भगवान को रखा है कि 'मैं जब तक जिंदा हूँ तब तक भगवान की मणि नहीं ले जाने दूँगा ।' भले भगवान में प्रीति नहीं थी, मणि में प्रीति थी लेकिन बीच में भगवान को रख दिया तो भगवद्भाव भी साथ में चला । मणि तो यहाँ रह गयी लेकिन भगवद्भाव से वह भगवद्धाम में ज़ायेगा । क्या घाटा हुआ ? चोर को तो लाख-डेढ़ लाख रुपया मिला, पुजारी को तो भगवान का धाम मिला । तुमको वह मरता हुआ दिखता है पर शरीर तो एक दिन मरनेवाला ही है । ❑

अमृत-कणिकाएँ

(पूज्य बापूजी के सारगर्भित अमृतवचन)

❋ **'जानिहि जीव तब जागा'** हम जगे हैं, हमारी सचमुच उन्नति हुई है अथवा नहीं, इसका क्या मापदंड है ? कि विषय-विलास, विकारी जीवन से मन उपराम हो और भगवत्प्राप्ति की तरफ झुकाव हो तो हम जगे हैं, हम पर भगवान की कृपा है, हमारा अपना पुरुषार्थ ठीक रास्ते है ।

❋ भगवान का यश गाने से आपका अपना भगवद्स्वभाव जाग्रत होगा। आपका तो भला होगा, आपके दर्शन करनेवालों का, आपकी वाणी सुननेवालों का, आपके कुल-खानदान में सात-सात पीढ़ियों का बेड़ा पार हो जायेगा।

जीवन में सत्त्व हो

(पूज्य बापूजी की पावन अमृतवाणी)

श्रुत्वा सत्त्वं पुराणं सेवया सत्त्वं वस्तुनः ।
अनुकृत्या च साधूनां सद्वृत्तिः प्रजायते ॥

'जीवन में पुराण आदि सात्त्विक शास्त्रों के श्रवण से, सात्त्विक वस्तु के सेवन से और साधु पुरुषों के अनुसार वर्तन करने से सात्त्विक वृत्ति उत्पन्न होती है ।'

आदमी में तामसी और राजसी वृत्ति जब जोर पकड़ती है तो वह खिन्न, अशांत और बीमार होता है, उद्विग्न होता है । सब कुछ होते हुए भी दरिद्र रहता है और जब सत्त्वगुण बढ़ता है तो सब कुछ होते हुए अथवा कुछ भी न होते हुए भी महा शोभा को पाता है ।

सत्त्वात् संजायते ज्ञानम् ।

सत्त्वगुण बढ़ने से ज्ञान में प्रगति होती है ।

आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः।

आहार शुद्ध होने पर सत्त्वगुण बढ़ता है ।

जिह्वा का आहार भोजन है और आँखों का आहार दृश्य है । कानों का आहार शब्द है, नाक का आहार गंध है और त्वचा का आहार स्पर्श है। स्पर्श करने की इच्छा है तो ठाकुरजी के चरणों को स्पर्श करें, ठाकुरजी को चढ़ाये हुए पुष्पों को आँखों पर लगायें । देखने की इच्छा है तो प्रभु के रूप को निहारें अथवा जो रूप दिखे उसमें प्रभु की भावना करें । बोलने की इच्छा है तो प्रभु के विषय में बोलें और सुनने की इच्छा है तो प्रभु के विषय में सुनें। 'पंचदशी' में आया है : **तच्चिंतनं...** उसीका चिंतन करें । **तत्कथनम्** । उसीका कथन करें । **अन्योन्यं तत्प्रबोधनम्** । उसीके विषय में परस्पर विचार-विमर्श करें । ऐसा करनेवाले को जल्दी-से-जल्दी परमात्म-साक्षात्कार हो जाता है । उसका बेड़ा पार हो जाता है । ❑

नहीं कोई अन्य सुगम सुपथ

संत तुकारामजी कहते हैं :

क्षीण झाला मज संसार संभ्रमें ।

'संसार में भटकते-भटकते मैं थक गया ।'

तो वह आपकी थकावट कैसे दूर हुई ? कि विश्रांति मिली, समाधान हुआ। यह किससे हुआ ?

शीतल या नामें झाली काया ।

तुकारामजी कहते हैं : 'भगवन्नाम से मेरी काया शीतल हुई । मेरा उद्धार हरि-कीर्तन से हुआ । हरिनाम और हरिगुण गाओ, अन्य सब उपाय दुःख का मूल हैं । लोगों को अपने अनुभव का ही मार्ग बताता हूँ -

भगवन्नाम का संकीर्तन करो, वही करते हुए यात्रा करो । सुजान हो, अजान हो, जो भी हो, हरिकथा करो । मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि इससे तर जाओगे ।

निराश मत हो । यह मत कहो कि 'हम पतित हैं, हमारा उद्धार क्या होगा !' मुझ-जैसा पतित और कोई न होगा । दूसरे लोग अन्य साधन करते होंगे पर मेरे लिए भगवन्नाम छोड़ दूसरा कोई साधन नहीं और इसी साधन से मैं तर गया ।

मेरे 'जी' को जंजाल से छुड़ाया, ऐसे दयालु मेरे प्रभु नारायण हैं । सतत भगवान श्रीविट्ठल का नाम मुख से उचारूँ, यही मेरा नियम, यही मेरा धर्म है। तुम लोग और कहीं मत देखो, श्रीहरि की कथा करो, उसीमें अकस्मात् तुम उन्हें देख लोगे । भगवान प्रेमाभक्तिवाले भक्तों के हाथ लगते हैं, अपने को बड़ा बुद्धिमान माननेवाले मर मिटते हैं तो भी उन्हें भगवान नहीं मिलते। निर्गुण भगवान भक्तप्रिय माधुर्य चखने के लिए अपनी इच्छा से सगुण बनकर प्रकट होते हैं । चित्त उनमें रँग जाय तो स्वयं ही चैतन्य हो जाय, फिर वहाँ निजानंद की क्या कमी रहे ! भगवान ही एक कृपा करनेवाले हैं। हमें उन्हींके नाम का विश्वास है । इसलिए वाणी से उन्हींका नाम-संकीर्तन करते हैं। मुझ मूर्ख को संतजनों ने ऐसा ही सिखाया है, उनके वचन पर विश्वास किये बैठा हूँ। भगवान के चरण पकड़े बैठा हूँ । तुकारामजी कहते हैं कि अब और कोई दूसरी इच्छा नहीं है।'

नाम-संकीर्तन कितना सरल पर कितना महत्त्वपूर्ण है, इसके लिए संत तुकारामजी शपथपूर्वक कहते हैं : 'नाम-संकीर्तन का साधन है तो बहुत सरल पर इससे जन्म-जन्मांतर के पाप भस्म हो जायेंगे । इस साधन को करते हुए वन-वन भटकने का कुछ काम नहीं है। नारायण स्वयं ही सीधे घर चले आते हैं। अपने ही स्थान में बैठ के चित्त को एकाग्र करो और प्रेम से अनंत को भजो । 'राम-कृष्ण-हरि-विट्ठल-केशव'- जिन्हें जो प्रिय लगे, सभी नाम भगवान के हैं, मंगलकारी हैं। सदा भगवन्नाम जपो। भगवन्नाम-जप छोड़कर और कोई साधन नहीं है - यह मैं भगवान विट्ठल की शपथ लेकर कहता हूँ । तुकारामजी कहते हैं कि यह साधन सबसे सुगम है। बुद्धिमान धनी ही यहाँ इस धन को हस्तगत कर लेता है।' ❐

जिसके जीवन में सत्संग है उसके जीवन में आपदाएँ नहीं आतीं, ऐसी बात नहीं है लेकिन उस पर आपदाओं का असर नहीं होता ।

जो सुखों में सुख का भोगी बनता है वह अकाल मृत्यु और अकारण अशांति का शिकार होकर अकाल पदच्युत हो जाता है। सुख का अधिक भोग नहीं करना चाहिए। सुख बाँटने की चीज है, दुःख पैरों के तले कुचलने की चीज है । **- पूज्य बापूजी**

जीवन-संजीवनी

- श्री परमहंस अवतारजी महाराज

✻ यदि मन में क्रोध आये तो नाखूनों का हथेली पर दबाव पड़े, इस तरह हाथों की मुट्ठियाँ कस के बाँधें और चिंतन करें : 'मैं क्रोध का साक्षी हूँ। क्रोध आया है, जायेगा। मैं खून-खराबा करके इसका दुरुपयोग करूँ या गर्जना करके सदुपयोग करूँ, इसमें मैं स्वतंत्र हूँ।' क्रोध तुम्हारा उपभोग न करे, विनाश न करे।

✻ बुरी नजर से किसीको मत देखो और न ही किसीसे कटु वचन बोलो।

✻ जैसे स्वास्थ्य के लिए शरीर, वस्त्र, मकान इत्यादि की स्वच्छता आवश्यक है, उसी प्रकार आत्मिक उन्नति के लिए मन की शुद्धि भी आवश्यक है।

✻ दुःख में और सुख में यही कहो कि **'तेरा भाणा मीठा लागे।'**

✻ शरण पड़े की लाज प्रभु रखते आये हैं। तुम भी पूर्णतः मन से चिंता और चतुराई त्याग उनकी समर्थता में विश्वास रखो। आपाभाव त्यागो तो निस्तार हो जायेगा।

✻ बाल एवं युवा अवस्था में ही अच्छी संगति करनेवाला वृद्धावस्था में परेशान नहीं होता।

✻ जीव अपनी वास्तविकता और उसके सामर्थ्य को भूलकर दीन-दुःखी होकर गुलामों जैसा पराधीन जीवन व्यतीत करता है। गुरु की न झेल पाये तो विकारों की शरण लेते हैं। गुरु की शरण विकारों से पार कर देती है। जिसका भाग्य उदय होता है, उसे सद्गुरु की शरण प्राप्त होती है। सद्गुरु उसे उसकी महान शक्ति का बोध कराते हैं। जन्म-जन्म के बिछुड़े हुओं को परम पिता से मिलाकर गुलाम से मालिक बना देते हैं। धन्य है सद्गुरु !

✻ ऐ सत्संगी ! देखादेखी अपनी माँगें न बढ़ाओ। तुम्हें भजन में उन्नति करने की अभिलाषा है तो सांसारिक पदार्थ बढ़ानेवालों से प्रतिस्पर्धा न करो। पूर्व की तरफ जाना हो तो पश्चिम दिशा की ओर पीठ करो, नहीं तो समय व्यर्थ नष्ट हो जायेगा।

✻ जिसमें इच्छा-वासना नहीं है वह शाहों का शाह है, बाहरी परिस्थितियाँ उसकी चाहे कैसी भी हों। इच्छाओंवाला भूखा और दुःखी है, चाहे उसके पास लाखों-करोड़ों हों।

✻ यदि सच्चे नाम की अभिलाषा है तो काम का त्याग करो। जैसे दिन और रात इकट्ठे नहीं रह सकते, वैसे ही भगवन्नाम और काम दिल में एक साथ नहीं रह सकते।

✻ दूसरों का उद्धार होना इतना कठिन नहीं जितना निंदक का, क्योंकि जब केवल अपने पाप धोना ही कठिन है तो निंदक जो दूसरों की निंदा करके उनके पाप भी अपने ऊपर ले लेता है, उसका उद्धार कैसे होगा ! ❑

(पृष्ठ २० से 'परिप्रश्नेन' का शेष) मंसूर कहता है : 'अनलहक ! मौत मुझे नहीं मार सकती। मौत मारती है तो शरीर को मारती है।' सुकरात जहर पी रहे हैं, बोले : 'मरेगा तो शरीर मरेगा, मेरा क्या !'

अपने मुक्तस्वभाव को कहीं जाकर पाना नहीं है। मुक्तस्वभाव को बनाना नहीं है। जो है उसकी स्मृति करनी है, उसका ज्ञान पाना है। 'मैं दुःखी हूँ, दुःखी हूँ' - ऐसा सोचने से दुःख बढ़ जाता है। शत्रु का चिंतन करने से मन में अशांति बढ़ जाती है, मित्र का चिंतन करने से आसक्ति बढ़ जाती है, वस्तुओं का चिंतन करने से ममता और आसक्ति बढ़ जाती है। लेकिन **अपने भगवत्स्वभाव का ज्ञान पाने से, उसका चिंतन करने से अंदर भगवद्‌रस, भगवद्ज्ञान, भगवत्स्मृति से तुम तो निहाल हो जाते हो, तुम्हारी मीठी निगाहों से समाज भी निहाल होने लगता है।** ❑

मौन की महिमा

आध्यात्मिक साधक को अपनी परिस्थिति एवं सामर्थ्य के अनुसार यदा-कदा अल्प अवधि तक (कुछ घंटे अथवा पूरा एक दिन) एकांत में स्वाध्याय, चिंतन, जप एवं ध्यान द्वारा शुद्ध चेतना के संस्पर्श तथा आत्मिक ऊर्जा के जागरण के लिए मौन-धारण करना चाहिए । सोद्देश्य (उद्देश्यसहित) मौन-धारण आंतरिक शक्ति और शांति के विकास में अत्यधिक सहायक होता है । मौन द्वारा भौतिक विषयों की वासना, तृष्णा, भय, चिंता, उद्वेग और उत्तेजनशीलता का शमन होने से शांतचित्त रहने का अभ्यास हो जाता है। मनुष्य निर्वैर होकर प्रेम की अद्भुत महिमा एवं प्रभाव को भी जान लेता है। शुद्ध चेतना का संस्पर्श अथवा चेतना-स्तर का ऊपर उठना ही मानव की समस्त विपन्नता के निदान का तथा समस्त अभ्युदय का अमोघ उपाय है ।

मौन के अंतर्गत ध्यान की साधना में विशेष प्रगति होती है तथा कभी-कभी साधक ध्यानावस्था में सुर-दुर्लभ अनिर्वचनीय आनंद की अनुभूति का सौभाग्य प्राप्त कर लेता है । आंतरिक विकास होने पर अपनी अंतर्निहित असीम क्षमता एवं अनंत सम्भावनाओं का बोध होने से नये रास्ते स्वयं खुल जाते हैं, मन का भटकाव समाप्त हो जाता है, उज्ज्वल जीवन की दिशा मिल जाती है, कष्टों की निवृत्ति हो जाती है तथा आनंद की प्रस्थापना हो जाती है। जीवन का लक्ष्य और उसकी प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त एवं स्पष्ट होने पर तदनुसार आचरण करना हमारा प्रथम कर्तव्य है ।

मौन-धारण प्रारम्भ में तो कष्टदायी प्रतीत होता है किंतु धैर्यपूर्वक अभ्यास होने पर मनुष्य को अपने भीतर आनंद का अक्षय भण्डार सरलता से हाथ आ जाता है । मौन के सोद्देश्य होने पर मन इतना सात्त्विक और प्रशांत हो जाता है कि मन में बोलने की अथवा निरर्थक कुछ करने की इच्छा ही नहीं रहती तथा वह धीरे-धीरे परमावस्था की ओर बढ़ने लगता है। आत्मसंयम, आत्मनियंत्रण, आत्मचिंतन और आत्मकल्याण के लिए सोद्देश्य मौन-धारण करना उत्तम साधन है। मौन के अभ्यास से वाणी का संयम सीखकर मनुष्य योग के प्रथम द्वार 'वाङ्निरोध' पर पहुँच जाता है तथा अल्प एवं मधुर वाणी का महत्त्व जान लेता है। उद्देश्यसहित मौन-धारण व्यक्तित्व-विकास में भी उपयोगी है । ❑

व्रत-पर्व और त्यौहार

१७ नवम्बर : देवउठी एकादशी, चतुर्मास समाप्त, भीष्मपंचक व्रत और तुलसी-विवाह प्रारम्भ
२१ नवम्बर : देव दिवाली, त्रिपुरारि पूर्णिमा, गुरु नानक जयंती
२८ नवम्बर : रविवारी सप्तमी
१ दिसम्बर : उत्पत्ति एकादशी (स्मार्त)
२ दिसम्बर : उत्पत्ति एकादशी (भागवत)
३ दिसम्बर : संत ज्ञानेश्वर महाराज पुण्यतिथि
१२ दिसम्बर : रविवारी सप्तमी

श्रद्धेय बाबा रामदेवजी,

सादर अभिवादन !

कुशलोपरांत, दिनांक १०-९-२०१० को 'आज तक' चैनल द्वारा संत श्री आसारामजी बापू का जो स्टिंग ऑपरेशन दिखाया गया, वह नितांत भ्रामक और तथ्यों को तोड़-मरोड़कर गढ़ा गया था। बार-बार 'कैमरा सच बोलता है' - का उद्घोष करनेवाले ने कैमरे को कहीं सच बोलने ही नहीं दिया। कैमरे का मुखौटा लगाकर वे सारी झूठी कहानी अपने मुँह से ही कह रहे थे। पिछले काफी समय से बापूजी के खिलाफ कैसे-कैसे भयंकर कुप्रचार हुए, उन्हें आपने देखा ही होगा पर उन सबका क्या कोई विशेष असर हुआ ? बापूजी के सत्य का धर्मरथ निर्बाध गति से चल ही रहा है।

बाबाजी ! क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि भारत की सनातन संस्कृति को तहस-नहस करने के लिए काफी समय से एक भयंकर षड्यंत्र चल रहा है ? ईसाई मिशनरियों द्वारा सुनियोजित ढंग से कितने बड़े पैमाने पर गरीब, पिछड़े वर्ग तथा आदिवासी-वनवासी लोगों का धर्म-परिवर्तन हो रहा है। यह कितनी गम्भीर चिंता का विषय है ! बापूजी ने हिन्दू जाति पर आये इस संकट की गम्भीरता को समझा और इसका प्रतिकार करने के लिए आगे आये। गरीब-आदिवासी क्षेत्रों के लोगों की हर तरह से यथासम्भव मदद की तथा आध्यात्मिक सत्संगों द्वारा उनमें उनका खोता जा रहा आत्मबल तथा स्वाभिमान जगाया। उन्हें गुरुमंत्र देकर पुरुषार्थी तथा आत्मनिर्भर बनाया, जिससे धर्म-परिवर्तन का मिशनरियों का कारोबार काफी मंदा पड़ गया। इसीलिए बापूजी के साथ ही हिन्दू धर्म के कतिपय अन्य प्रतिष्ठित संतों के प्रति लोगों की श्रद्धा तोड़ने का एक षाड्यंत्रिक अभियान चल पड़ा है।

देश की लगभग तमाम इलेक्ट्रॉनिक तथा प्रिंट मीडिया में भारी पूँजी-निवेश कर उन पर विदेशी षड्यंत्रकारी साजिशकर्ताओं ने कब्जा कर लिया है और मनचाहे ढंग से उनसे देश के सुप्रतिष्ठित संतों पर हर तरह से कीचड़ उछालने का कुचक्र चला रहे हैं। इस बात को अब आम आदमी भी समझने लगा है। ऐसे में आपके द्वारा इनके समर्थन में वक्तव्य देकर देशवासियों में भ्रम की स्थिति पैदा करना घोर चिंताजनक है। बिना तथ्यों की समीक्षा किये, बिना आश्रम का स्पष्टीकरण सुने, आप घुमा-फिराकर उनकी बात का समर्थन कर उन्हें बल दे रहे हैं, क्या यह उचित है ? 'बापू एक फरार महिला अपराधी को शरण देने को तैयार हैं।' - उनके द्वारा कही हुई इस बात को आपने कैसे मान लिया ? आपने कहा कि 'मैंने भी उसकी क्लिपिंग देखी है।' क्या आपने उसमें कहीं भी उनको बापूजी से ऐसा कहते हुए देखा है ? 'चम्बल की घाटीवाले और पुलिस का मर्डर करनेवाले उसी आश्रम में पहले रुक चुके हैं।' - क्या आपने कैमरे को ऐसा बोलते कहीं सुना ? बापूजी ने तो स्पष्ट कहा है कि 'यहाँ चम्बल की घाटीवाले और पुलिस का मर्डर करनेवाले भी आते हैं।' बापूजी का 'यहाँ' कहने का तात्पर्य 'हरिद्वार' था, आश्रम नहीं। हरिद्वार में कितने ही लोग आते रहते हैं, उसका किसीको क्या पता ? बापूजी के पास भी किसीके आने की मनाही तो है नहीं, कोई भी आ सकता है संत का खुला दरबार है। पर इनका यह कहना कि 'ऐसे लोग उसी आश्रम में पहले रुक चुके हैं।' एक सफेद झूठ है। क्या आपने बापू को ऐसा बोलते सुना है ? हमें आश्चर्य तो इस बात का है कि आप जैसा बुद्धिमान व्यक्ति क्यों इनकी बातों में आ गया ! बापूजी के आश्रम आध्यात्मिक साधना के

केन्द्र हैं, ये कोई अपराधियों के सुधार-गृह नहीं हैं । ४०-५० वर्षों की बापूजी की दीर्घ आध्यात्मिक यात्रा में एक-दो अपराधी वृत्ति के लोग भी आत्म-कल्याण की भावना से यदि आकर सुधर गये तो इसमें क्या आश्चर्य है ! ऐसा तो कई संतों के साथ हुआ है । दुःख तो इस बात का है कि इनके इस तरह के मनगढ़ंत प्रलापों को सच मानकर आपने बिना सोचे-समझे ऐसा कैसे कह दिया कि 'सचमुच, उससे आस्था पर एक गहरी चोट हुई है ।'

बाबाजी ! क्या आपकी आस्था इतनी कमजोर है कि किसी संत से छल-कपट कर झूठा नाटक कर रहे लोगों की बकवास से उसे गहरी चोट लग जाय ! महाराज ! ये वही लोग हैं जिन्होंने कुछ वर्ष पूर्व आपकी दवाइयों में हड्डियों का पाउडर होने का हंगामा खड़ा कर कितना बवाल मचाया था । उस समय पूज्य बापूजी ने बिना आपसे कोई स्पष्टीकरण लिये अपने जाहिर सत्संगों में इस बात का जोरदार ढंग से खंडन किया था और इसे विदेशी षड्यंत्रकारियों की साजिश बताया था । यही नहीं, आश्रम से प्रकाशित होनेवाली मासिक पत्रिका 'ऋषि प्रसाद' तथा 'लोक कल्याण सेतु' में इसे देश को तोड़नेवाली शक्तियों का एक षड्यंत्र बताया था । क्योंकि बापूजी को पूरा विश्वास था कि आप ऐसा नहीं कर सकते । इस बात को आप कैसे भूल गये ? आपके व्यवहार में यह अजीब परिवर्तन कहीं राजनीति में आने के कारण तो नहीं आया ?

आपके इस व्यवहार से बापूजी के लाखों भक्तों को बड़ा गहरा आघात पहुँचा है । उन्हें आप जैसे सुलझे हुए सज्जन बाबाजी द्वारा झूठे स्टिंग ऑपरेशनकर्ताओं की बात को सच मानकर उनके समर्थन में बोलने से पीड़ा हुई है । अतः आप लाखों लोगों की भावनाओं का आदर करते हुए स्टिंग ऑपरेशन की बिना किसी काट-छाँट के पूरी मूल सी.डी. 'आज तक' चैनलवालों से माँगें और यदि वे न दें तो आप उनके इस कृत्य का जोरदार ढंग से खंडन करते हुए अपना वक्तव्य दें ।

बाबाजी ! आज हिन्दुओं के सामने कई चुनौतियाँ हैं । एक ओर मुस्लिम आतंकवाद तो दूसरी ओर ईसाईयत का बढ़ता प्रभाव हिन्दू जाति को निगल जाने के लिए तैयार है । हिन्दुओं को आपस में लड़ा-भिड़ाकर 'फूट डालो और राज करो' की नीति आज भी अच्छी तरह चल रही है । आज आवश्यकता है हिन्दुओं के एक सशक्त संगठन की । आप एक युवा प्रतिभाशाली समर्थ संत हैं । लाखों लोगों को आपके यौगिक आसनों तथा दवाओं से लाभ हुआ है और वे आपको चाहते तथा मानते हैं । अतः आप चाहें तो भारत को विश्वगुरु बनाने के बापूजी के दृढ़ संकल्प में सहयोग कर सकते हैं या फिर देश को गुलाम बनाने की तैयारी में लगे षड्यंत्रकारियों के इशारों पर अपने ही वरिष्ठ आत्मारामी संतों पर संदेहजनक टिप्पणियाँ कर हिन्दू जाति को विखंडित कर सकते हैं । **यथेच्छसि तथा कुरु...**

– आर.के. बिश्नोई
सिरसा (हरियाणा) □

'ऋषि प्रसाद' वार्षिक सम्मेलन

'ऋषि प्रसाद' के परोपकारी सेवादारों का **'अखिल भारतीय वार्षिक सम्मेलन'** प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी **'उत्तरायण शिविर'** के पश्चात् आयोजित किया जा रहा है । **'घर-घर अलख जगाओ'** अभियान में शामिल सेवादारों के लिए इस सम्मेलन में एक विशेष आयोजन की व्यवस्था की गयी है। सेवा के इच्छुक जो सज्जन अब तक इस अभियान में शामिल नहीं हो सके हैं, वे अपने नजदीकी **'ऋषि प्रसाद कार्यालय'** का सम्पर्क करके अभी भी इसमें शामिल होकर इस विशेष आयोजन का लाभ ले सकते हैं। सभी सेवादारों से नम्र निवेदन है कि इस सम्मेलन में शामिल होकर **'ऋषि प्रसाद'** की सेवा को गतिमान एवं सुचारु बनायें ।

शीत ऋतु विशेष

(शीत ऋतु : २३ अक्टूबर से १७ फरवरी)

शीत ऋतु में पाचनशक्ति प्रबल रहती है। अतः इस समय लिया गया पौष्टिक व बलवर्धक आहार वर्ष भर शरीर को तेज, बल और पुष्टि प्रदान करता है। आइये, इस ऋतु में अपनी सेहत बनाने के लिए कुछ सरल प्रयोग जानें :

१. बल, सौन्दर्य व आयुवर्धक प्रयोग : शरद पूर्णिमा के बाद पुष्ट हुए आँवलों का रस ४ चम्मच, शुद्ध शहद २ चम्मच व गाय का घी १ चम्मच मिलाकर नियमित सेवन करें। इससे बल, वर्ण, ओज, कांति व दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है।

२. मस्तिष्क-शक्तिवर्धक प्रयोग : ६ से १० काली मिर्च, २ बादाम, २ छोटी इलायची, १ गुलाब का फूल व आधा चम्मच खसखस रात को एक कुल्हड़ में पानी में भिगोकर रखें। सुबह बादाम के छिलके उतारकर सबको मिलाकर पीस लें व गर्म दूध के साथ मिश्री मिलाकर पियें। इसके बाद २ घंटे तक कुछ न खायें। इससे मस्तिष्क की थकान दूर होकर तरावट आती है एवं शक्ति बढ़ती है। यह प्रयोग २-३ हफ्ते नियमित करें।

३. स्फूर्तिदायक पेय : २ चम्मच मेथीदाना २०० मि.ली. पानी में रात भर भिगोकर रखें। सुबह धीमी आँच पर चौथाई पानी शेष रहने तक उबालें। छानकर गुनगुना रहने पर २ चम्मच शुद्ध शहद मिलाकर पीयें। दिन भर शक्ति व स्फूर्ति बनी रहेगी।

४. पौष्टिक नाश्ता : चना, मूँग, मोठ यह सब मिलाकर एक कटोरी, एक मुट्ठी भर मूँगफली व एक चम्मच तिल (काले हों तो उत्तम) रात भर पानी में भिगोकर रखें। सुबह नमक मिलाकर भाप लें, उबाल लें। इसमें हरा धनिया, पालक व पत्तागोभी काटकर तथा चुकंदर, मूली एवं गाजर कद्दूकश करके मिला दें। ऊपर से काली मिर्च बुरककर नींबू निचोड़ दें। चार व्यक्तियों के लिए नाश्ता तैयार है। इसे खूब चबा-चबाकर खायें। यह नांश्ता सभी प्रकार के खनिज-द्रव्यों, प्रोटीन्स, विटामिन्स व आवश्यक कैलरीज की पूर्ति करता है। जिनकी उम्र ६० साल से अधिक है व जिनकी पाचनशक्ति कमजोर है, उनको नाश्ता नहीं करना चाहिए।

५. शक्ति-संवर्धक आहार : (१) बाजरे के आटे में तिल मिलाकर बनायी गयी रोटी पुराने गुड़ व घी के साथ खाना, यह शक्ति-संवर्धन का उत्तम स्रोत है। १०० ग्राम बाजरे से ४५ मि.ग्रा. कैल्शियम, ५ मि.ग्रा. लौह व ३६१ कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। तिल व गुड़ में भी कैल्शियम व लौह प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। (२) सर्दियों में पत्तोंसहित ताजी, कोमल मूली का सेवन शक्तिवर्धक सरल साधन है। मूली में गंधक, पोटेशियम, आयोडीन, कैल्शियम, लौह, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम आदि खनिज विपुल मात्रा में पाये जाते हैं। अस्थि-निर्माण में इनकी विशेष आवश्यकता होती है। (पुरानी, पकी मूली अथवा सूखी (बड़ी, मोटी) मूली त्रिदोष-प्रकोपक होने के कारण त्याज्य है।)

६. बल-वीर्य-पुष्टिवर्धक प्रयोग : शीत ऋतु में दही का सेवन लाभदायी है। दही में दूध से डेढ़ गुना अधिक कैल्शियम पाया जाता है। यह दूध की अपेक्षा जल्दी पच जाता है। शीघ्र शक्ति प्रदान करनेवाले द्रव्यों में से दही एक है। ताजे, मधुर दही में थोड़ी मिश्री मिलाकर मथ लें (इससे दही के दोष नष्ट हो जाते हैं) व दोपहर में भोजन के साथ खायें। इससे शरीर पुष्ट हो जाता है।

सावधानी : आम, अजीर्ण, कफ, सर्दी-जुकाम, रक्तपित्त, गुर्दे व यकृत की बीमारी एवं हृदयरोग वालों को दही का सेवन नहीं करना चाहिए।

इन प्रयोगों में देश (स्थान), व्यक्ति की उम्र, प्रकृति व पाचन के अनुसार द्रव्यों की मात्रा कम या अधिक ली जा सकती है।

शीत ऋतु में उपयोगी अश्वगंधा पाक

लाभ : सर्दियों में अश्वगंधा से बने हुए पाक का सेवन करने से पूरे वर्ष शरीर में शक्ति, स्फूर्ति व ताजगी बनी रहती है।

✽ यह पाक शक्तिवर्धक, वीर्यवर्धक, स्नायु व मांसपेशियों को ताकत देनेवाला एवं कद बढ़ानेवाला एक पौष्टिक रसायन है। यह धातु की कमजोरी, शारीरिक-मानसिक कमजोरी आदि के लिए उत्तम औषधि है। इसमें कैल्शियम, लौह तथा जीवनसत्त्व (विटामिन्स) भी प्रचुर मात्रा में होते हैं।

✽ अश्वगंधा अत्यंत वाजीकर अर्थात् शुक्रधातु की त्वरित वृद्धि करनेवाला रसायन है। इसके सेवन से शुक्राणुओं की वृद्धि होती है एवं वीर्यदोष दूर होते हैं। धातु की कमजोरी, स्वप्नदोष, पेशाब के साथ धातु जाना आदि विकारों में इसका प्रयोग बहुत ही लाभदायी है।

✽ यह पाक अपने मधुर व स्निग्ध गुणों से रस-रक्तादि सप्तधातुओं की वृद्धि करता है। अतः मांसपेशियों की कमजोरी, रोगों के बाद आनेवाली दुर्बलता तथा कुपोषण के कारण आनेवाली कृशता आदि में विशेष उपयोगी है। इससे विशेषतः मांस व शुक्र धातु की वृद्धि होती है। अतः यह राजयक्ष्मा (क्षयरोग) में भी लाभदायी है। क्षयरोग में अश्वगंधा पाक के साथ 'सुवर्ण मालती' गोली का प्रयोग करें। किफायती दामों में शुद्ध 'सुवर्ण मालती' व 'अश्वगंधा चूर्ण' आश्रम के सभी उपचार केन्द्रों व स्टॉलों पर उपलब्ध हैं।

✽ जब धातुओं का क्षय होने से वात का प्रकोप होकर शरीर में दर्द होता है, तब यह दवा बहुत लाभ करती है। इसका असर वातवाहिनी नाड़ी पर विशेष होता है। अगर वायु की विशेष तकलीफ है तो इसके साथ 'महायोगराज गुगल' गोली का प्रयोग करें। ✽ इसके सेवन से नींद भी अच्छी आती है। यह वातशामक तथा रसायन होने के कारण विस्मृति, यादशक्ति की कमी, उन्माद, मानसिक अवसाद (डिप्रेशन) आदि मनोविकारों में भी लाभदायी है। दूध के साथ सेवन करने से शरीर में लाल रक्तकणों की वृद्धि होती है, जठराग्नि प्रदीप्त होती है, शरीर में शक्ति आती है व कांति बढ़ती है। सर्दियों में इसका लाभ अवश्य उठायें।

विधि : ४८० ग्राम अश्वगंधा चूर्ण को ६ लीटर गाय के दूध में, दूध गाढ़ा होने तक पकायें। दालचीनी (तज), तेजपत्ता, नागकेशर और इलायची का चूर्ण प्रत्येक १५-१५ ग्राम मात्रा में लें। जायफल, केसर, वंशलोचन, मोचरस, जटामांसी, चंदन, खैरसार (कत्था), जावित्री (जावंत्री), पीपरामूल, लौंग, कंकोल (कबाब चीनी), शुद्ध भिलावे की मिंगी, अखरोट की गिरी, सिंघाड़ा, गोखरू का महीन चूर्ण प्रत्येक ७.५-७.५ ग्राम की मात्रा में लें। रस सिंदूर, अभ्रकभस्म, नागभस्म, बंगभस्म, लौहभस्म प्रत्येक ७.५-७.५ ग्राम की मात्रा में लें। उपर्युक्त सभी चूर्ण व भस्म मिलाकर अश्वगंधा से सिद्ध किये दूध में मिला दें। ३ किलो मिश्री अथवा चीनी की चाशनी बना लें। जब चाशनी बनकर तैयार हो जाय तब उसमें से १-२ बूँद निकालकर उँगली से देखें, लच्छेदार तार छूटने लगें तब इस चाशनी में उपर्युक्त मिश्रण मिला दें। कलछी से खूब घोटें, जिससे सब अच्छी तरह से मिल जाय। इस समय पाक के नीचे तेज अग्नि न हो। सब औषधियाँ अच्छी तरह से मिल जाने के बाद पाक को चूल्हे से उतार लें।

परीक्षण : पूर्वोक्त प्रकार से औषधियाँ डालकर जब पाक तैयार हो जाता है, तब वह कलछी से उठाने पर तार-सा बँधकर उठता है। थोड़ा ठंडा करके १-२ बूँद पानी में डालने से उसमें डूबकर एक जगह बैठ जाता है, फैलता नहीं। ठंडा होने पर उँगली से दबाने पर उसमें उँगलियों की रेखाओं के निशान बन जाते हैं।

पाक को थाली में रखकर ठंडा करें। ठंडा होने पर चीनी मिट्टी या काँच के बर्तन में भरकर रखें, प्लास्टिक में नहीं। १० से १५ ग्राम पाक सुबह शहद या गाय के दूध के साथ लें। ❑

बापूजी का वचन हुआ साकार

मैं मोहनलाल यादव पेशे से वकील हूँ। सन् १९९३ में पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने के उपरांत शादी के १६ वर्ष बाद बापूजी के आशीर्वाद से मुझे क्रमशः दो पुत्रों की प्राप्ति हुई। बड़े पुत्र रामकृष्ण को हमने पढ़ाई के लिए छिंदवाड़ा गुरुकुल में रखा था, जहाँ बापूजी को बदनाम करने के लिए षड्यंत्र करके २९-७-२००८ को उसकी हत्या करवा दी गयी थी। इस बात को मीडिया द्वारा खूब उछाला गया था परंतु हमें अपने गुरुदेव पर पूरा विश्वास है। रजोकरी (दिल्ली) में हजारों साधकों के बीच दिनांक २-८-२००८ को पूज्य बापूजी ने हमें आशीर्वाद देते हुए कहा कि 'फिक्र मत कर, रामकृष्ण पुनः तेरे घर वापस आयेगा।' और हुआ भी ऐसा ही। निंदकों-कुप्रचारकों के मुँह पर करारा तमाचा जड़ते हुए पूज्य बापूजी के आशीर्वाद के फलस्वरूप दिनांक ३१-८-२०१० को मेरी धर्मपत्नी ने एक बालक को जन्म दिया, ज़िसकी शक्ल रामकृष्ण से हू-बहू मिलती है। पैदा होने के एक घण्टे बाद जब हमने पूज्यश्री के निर्देशानुसार उसकी जिह्वा पर 'ॐ' लिखने के लिए उससे कहा : ''बेटा रामकृष्ण ! जीभ बाहर निकालो।'' तो आश्चर्य ! कि हमारे इतना कहते ही उसने जीभ बाहर निकाल दी और हमने सोने की सलाई से 'ॐ' लिखा। जब भी हम उसको 'रामकृष्ण' के नाम से पुकारते हैं तो वह तुरंत कुछ-न-कुछ प्रतिक्रिया जरूर करता है। मेरे घर बापूजी ने रामकृष्ण की आत्मा को पुनः वापस भेजकर मेरे ऊपर जो उपकार किया है, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। यह दुनिया के लिए बापूजी द्वारा किया गया एक चमत्कार है किंतु मेरे लिए यह बापूजी द्वारा दिया गया प्रसाद है। कुप्रचारवालों द्वारा एड़ी-चोटी का जोर लगाये जाने पर भी साधकों की श्रद्धा न हिली, बल्कि वह तो नित्य निरंतर बढ़ती ही जा रही है। ये कुछ भी करें, कुछ भी बकें परंतु सर्वसमर्थ हमारे गुरुदेव पूज्य बापूजी पर हमारा अटूट विश्वास था, है और रहेगा। उसे ये तो क्या इनके बाप भी नहीं हिला सकते !

पूज्य बापूजी की असीम करुणा-कृपा देखकर कुछ माह पहले 'ऋषि प्रसाद' में छपा 'मुण्डकोपनिषद्' का एक श्लोक याद आया :

यं यं लोकं मनसा संविभाति
विशुद्धसत्त्वः कामयते यांश्च कामान्।
तं तं लोकं जयते तांश्च कामां-
स्तस्मादात्मज्ञं ह्यर्चयेद् भूतिकामः॥

'ऐश्वर्य की इच्छा करनेवाला पुरुष आत्मज्ञानी की सेवा-पूजा करे, क्योंकि वह विशुद्धचित्त आत्मवेत्ता (अपने शिष्य या भक्त के लिए) मन से जिस-जिस लोक की भावना करता है और जिन-जिन भोगों को चाहता है, वह (शिष्य या भक्त) उसी-उसी लोक और उन्हीं-उन्हीं भोगों को प्राप्त कर लेता है।' **(मुण्डकोपनिषद् : ३.१.१०)**

पूज्य बापूजी केवल सद्गुरु ही नहीं वरन् अवतारी महापुरुष हैं। उनके श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम !

- मोहनलाल यादव
वडाला (पूर्व), मुंबई।
मो. : ९२२४२१४७५६. ❑

भक्तों के अनुभव

कैंसर की गाँठ तो क्या, अज्ञान-ग्रंथि से भी मुक्त करा रहे हैं गुरुवर

परम पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम !

मैं एक शिक्षिका हूँ और झारखण्ड में रहती हूँ। मेरा भाई रथीनपाल मैंगलोर (कर्नाटक) में एक एल्यूमीनियम की फैक्ट्री में कार्यरत है। वह पिछले तीन वर्षों से गले और जीभ के घाव से बहुत पीड़ित था। कुछ भी खाने-पीने में उसे बहुत तकलीफ होती थी। काफी इलाज के बावजूद भी उसके स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हो रहा था। डॉक्टरों ने बताया कि यह गले का कैंसर है। भाई ने रोते हुए मुझे बताया कि 'मुझे कैंसर है और मेरा जीवन समाप्त हो रहा है। अब मेरे छोटे-छोटे बच्चों का क्या होगा ?' मैंने सुनते ही पूज्य बापूजी से प्रार्थना की और भाई के जीवन की रक्षा का भार उन्हें सौंप दिया।

मुझ पर गुरुवर की कृपा हुई और सुबह चार बजे पूज्य बापूजी ने मुझे सपने में आदेश दिया कि 'भाई को सात दिन तक रोज सुबह ग्यारह तुलसी के पत्ते खिला दे, ठीक हो जायेगा।' सुबह होते ही मैंने भाई को फोन करके यह प्रयोग बताया। उसने खूब श्रद्धापूर्वक बापूजी की इस आज्ञा का पालन किया। सात दिन में ही गले की जलन तथा दर्द दूर हो गया। यह प्रयोग उसने २१ दिन तक किया। अब वह एकदम ठीक है। घाव का नामोनिशान तक नहीं है। कैसे समर्थ, दयालु और उदार हैं मेरे बापूजी, जो सपने में भी मार्गदर्शन देकर भक्तों की रक्षा करते हैं ! ऐसे सर्वसमर्थ, भक्तवत्सल, करुणा-वरुणालय सद्गुरु परम पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में बारम्बार प्रणाम ! **- श्रीमती कृष्णा साव**

इचड़ासोल, जि. पूर्वी सिंहभूम, झारखण्ड।

मो. : ०९४३१३४१३८१.

सन् २००७ की बात है। मेरे गले में कैंसर की गाँठ हो गयी थी, जिससे खाने-पीने, बोलने में काफी तकलीफ होती थी। इलाज चालू करवाया। केस बहुत सीरियस था। डॉक्टर ने कहा कि 'ऐसे केस में ऑपरेशन सम्भव नहीं है।'

तब मैं मोटेरा स्थित बापूजी के आश्रम में गया और अपने गले के कैंसर की बात पूज्य गुरुदेव को बतायी। गुरुदेव ने मुझे आरोग्य मंत्र दिया। मैंने खूब श्रद्धापूर्वक उस मंत्र का जप शुरू किया। 'श्री आसारामायण' के १०८ पाठ किये और आश्रम के 'धन्वंतरि आरोग्य केन्द्र' से दवा ली। उससे चमत्कारिक लाभ हुआ। गले की गाँठ धीरे-धीरे मिट गयी। यह देखकर डॉक्टरों को भी आश्चर्य हुआ। अभी मैं पूज्य बापूजी की कृपा से पूर्ण स्वस्थ हूँ। पूज्य बापूजी की महिमा का वर्णन कैसे करूँ ? मैं तो बस इतना ही कहना चाहता हूँ कि गले की गाँठ तो क्या, वे हमें जन्मों-जन्मों से भटकाती आयी अज्ञान की गाँठ से भी मुक्त करा रहे हैं।

पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम। **- हरेन्द्र कुमार चुनीलाल**

नरोड़ा, अहमदाबाद (गुज.). ❑

'ज्योत-से-ज्योत जगाओ' राष्ट्रीय सम्मेलन

'बाल संस्कार केन्द्र' की सेवाओं को व्यापक एवं सुव्यवस्थित रूप देने हेतु उत्तरायण पर्व-२०११ के पावन अवसर पर राष्ट्रस्तरीय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। बाल संस्कार केन्द्र, विद्यार्थी शिविर व सम्मेलन के शिक्षक तथा विद्यार्थी सेवाओं में रुचि रखनेवाले साधक इसका अवश्य लाभ लें।

मुख्य अंश : ✼ बाल संस्कार केन्द्र चलाने हेतु प्रशिक्षण ✼ विद्यार्थी शिविर शिक्षकों एवं सम्मेलन-प्रशिक्षकों का चयन ✼ बाल संस्कार प्रभारियों की विशेष बैठक।

विशेष : ✼ प्रशिक्षणार्थियों को सत्संग के एक सत्र में आगे बैठने का सुअवसर भी प्राप्त होगा। ✼ सम्मेलन में भाग लेने हेतु पहले से पंजीकरण कराना अनिवार्य है।

सम्पर्क करें : बाल संस्कार विभाग, अहमदाबाद। फोन नं. : (०७९) ३९८७७७४९.

सूचना : स्थान व तारीख SMS के द्वारा सूचित की जायेगी।

संस्था समाचार

भौतिकता का आध्यात्मिकीकरण करने का संदेश :
आत्मसाक्षात्कार-दिवस

पंचभौतिक शरीर एवं भौतिक वस्तुओं का आध्यात्मिकीकरण कैसे किया जाता है, इसका सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करता है पूज्य बापूजी का आत्मसाक्षात्कार-दिवस । सामान्य लोग तो जन्मदिवस पर पार्टी देकर स्वयं व दूसरों को खानपान व नाच-गान में उलझाते हैं परंतु बापूजी जैसे आत्मसंतृप्त महापुरुष भक्तों द्वारा भावपूर्वक मनाये जानेवाले अपने अवतरण-दिवस व आत्मसाक्षात्कार-दिवस को भी गरीबों की सहायतार्थ **'बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय'** सेवाकार्यों में संलग्न करने का संदेश देते हैं।

भारत भर में ही नहीं वरन् विश्व के अन्य अनेक देशों में भी बापूजी के आश्रम, समितियाँ व शिष्य-भक्त-अनुयायी गरीबों तथा असहायों की सेवा में रत हैं । पूज्यश्री के 'अवतरण-दिवस व आत्मसाक्षात्कार-दिवस' से तो इन सेवाकार्यों की विशेष श्रृंखलाएँ शुरू हो जाती हैं । हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी बापूजी के आत्मसाक्षात्कार दिवस (९ अक्टूबर) के अवसर पर गरीबों-आदिवासियों में अनाज, भोजन-प्रसाद, मिष्टान्न, बर्तन, कपड़े, नकद दक्षिणा आदि का वितरण किया गया । इनके साथ उनकी अँधेरी झोंपड़ियों में प्रकाश करने के लिए मोमबत्तियाँ व माचिस, कँकरीले देहाती रास्तों से उनके पैरों की रक्षा के लिए जूते-चप्पल, धूप में तपते उनके सिरों की रक्षा के लिए टोपियाँ, ठंड में ठिठुरते उनके शरीर की रक्षा के लिए कम्बल, कुपोषण से उनके शरीर की रक्षा के लिए फल, खजूर, आँवला चूर्ण तो कहीं च्यवनप्राश आदि पौष्टिक पदार्थ, 'अनपढ़-गँवार' की सील उनके बच्चों के माथे पर से हटाने के लिए नोटबुक, पाठ्यपुस्तकें, पेन, पेंसिल, विद्यालय गणवेश आदि आदि और अज्ञान-अंधकार में जी रहे ये गरीब तथा धनवान गरीब - सभीके जीवन में ज्ञान का उजाला करने के लिए विद्याओं में सर्वश्रेष्ठ आत्मविद्या के सत्संग से उन्हें लाभान्वित किया गया व यह सेवा-श्रृंखला अभी भी जारी है ।

जन्मदिवस तो रोज लाखों लोगों का मनाया जाता है, आत्मसाक्षात्कार-दिवस भी कहीं-कहीं, किन्हीं-किन्हीं विरले महापुरुष का मनाया जाता होगा परंतु विश्व के इतिहास में ऐसी अनोखी रीति से व इतने व्यापक तौर पर मनाया जानेवाला आत्मसाक्षात्कार-दिवस तो आपने-हमने कहीं देखा-सुना-पढ़ा नहीं होगा ।

उपरोक्त सेवाकार्यों के अलावा आज बापूजी की प्रेरणा से देश की सर्वांगीण उन्नति के लिए अनेक राष्ट्रव्यापी एवं विश्वव्यापी अभियान चलाये जा रहे हैं, जैसे - नशामुक्ति अभियान, युवाधन सुरक्षा अभियान, पर्यावरण सुरक्षा अभियान, बाल संस्कार केन्द्रों के द्वारा 'ज्योत-से-ज्योत जगाओ' अभियान व युवा सेवा संघ द्वारा 'तेजस्वी युवा' अभियान, 'ऋषि प्रसाद' रूपी सत्साहित्य घर-घर पहुँचाने हेतु 'घर-घर अलख जगाओ' अभियान आदि । एक वर्ष पूर्व बापूजी के आत्मसाक्षात्कार-दिवस पर ही जिसका रोपण किया गया था, वह 'युवा सेवा संघ' रूपी पौधा आज विशाल वृक्ष के रूप में विकसित होता नजर आ रहा है । देश भर में हजारों की संख्या में युवा इसके सदस्य बन चुके हैं और बन रहे हैं ।

इस वर्ष पूज्य बापूजी के आत्मसाक्षात्कार-दिवस पर **९ व १० अक्टूबर** को गुरुदेव का प्रत्यक्ष दर्शन-सत्संग पाने का महासौभाग्य पाया **पुणे (महा.)** वासियों ने । संत-दर्शन एवं सत्संग पाने हेतु तितिक्षा सहने का सद्गुण उनमें विशेष देखने को मिला । पूज्यश्री ने इस अवसर पर अपने जीवन के अनेक मधुर प्रसंग व प्रेरक अनुभव बताये । पुणेवासी इस समय इतने एकाग्रचित्त, आनंदित देखे गये मानो, स्वाति नक्षत्र में वर्षा की एक बूँद पाने हेतु आतुर सीपों को स्वाति नक्षत्र की जलधाराएँ हाथ लग गयी हों ।

पूज्य बापूजी ने पुणेवासियों एवं वेब-साइट

तथा दूरभाष द्वारा सत्संग-लाभ ले रहे भारत भर के लाखों शिष्यों-सत्संगियों में ईश्वरप्राप्ति का उत्साह जगाते हुए संदेश दिया :

''दो सरोवरों में अमृत जैसा पानी भरा है और आसोज सुद दो दिवस को पाल टूट गयी, तो कौन-से सरोवर का कौन-सा पानी ? एक कमरे में दो दीये जलते हैं, तो कौन-से दीये का कौन-सा प्रकाश है ? ऐसे ही यह आत्मा और ब्रह्म एक ही हैं। जैसे तरंग और समुद्र एक ही हैं, गहना और सोना एक ही हैं वैसे ही आत्मा और परमात्मा एक ही हैं। इसके साक्षात्कार का दिवस, ब्राह्मी स्थिति का दिवस... आसोज सुद दो दिवस ! भगवान दूर हैं, हम मरेंगे फिर भगवान मिलेंगे - यह वहम हटा दिया गुरुदेव ने। हम भजन करेंगे और हमारे मन के अनुसार भगवान बन के आयेंगे, ऐसी मेहनत से बचा दिया गुरुदेव ने। सब अपने-अपने मन का भगवान चाहते हैं। मन का भगवान चाहते हैं तो तपस्या बहुत करनी पड़ती है और मन के भगवान बेचारे बन जाते हैं फिर अंतर्धान हो जाते हैं। हमारे गुरुदेव ने ऐसा रास्ता दिखाया कि अपने मन के भगवान नहीं चाहिए। भगवान जैसे हैं, वैसे ही स्वीकार हैं। मैंने गुरु-प्रसादी पाकर आत्मस्वरूप को जान लिया है, तुम केवल जानने का इरादा बना लो, बस।

रुदन को गीत में बदलने की कला सीख लो।
वैर को प्रीत में बदलने की कला सीख लो।
द्वेष को प्रेम में बदलने की कला सीख लो।
जिंदगी है चार दिन की,
मरनेवाले शरीर के द्वारा अमर आत्मा के आनंद को पाने की कला सीख लो।''

१ से ८ अक्टूबर तक पूज्यश्री के **अहमदाबाद** एकांतवास के दौरान हुए सत्संग में पूज्यश्री उवाच : ''जिनके पास आत्मविद्या, आत्मसुख, आत्मानंद है उनको संसार के विषय-विकारवाली, रंग-रोगनवाली यह माया क्या करेगी ! सदाशिव की सेवा गौरीजी आदर से करती हैं। उन्हें पति मानती हैं, परमात्मा मानती हैं, गुरु मानती हैं, ऐसी पार्वती की सेवा से भी शिवजी आकर्षित नहीं होते तो बंदरी का नृत्य और उसकी सेवा उन्हें क्या आकर्षित करेगी !

यह माया और माया के विषय-विकार तो बंदरी जैसे हैं। जो लोग आत्मा की महिमा नहीं जानते और संसार को सच्चा मानते हैं, वे इस संसाररूपी बंदरी के चक्कर में आ जाते हैं और जो अपने शिवस्वभाव में तृप्त हैं, उनको तो विषय-विकार, संसार सब सपना है, खेल लगता है।''

१६ अक्टूबर को एक ही दिन **उरुली कांचन, बारामती, अहमदनगर एवं पाथर्डी (महा.)** की सत्संगप्रेमी जनता को सत्संग-अमृत का पान कराते हुए, झुमाते हुए बापूजी संत एकनाथजी की अवतार-भूमि, कर्मभूमि और महाराष्ट्र के श्रद्धास्थान पैठण नगरी में पहुँचे। **१७ व १८ अक्टूबर** को दशहरे के पर्व पर **पैठण (महा.)** की इस पावन भूमि में बापूजी के सत्संग का लाभ लेने पैठण, औरंगाबाद व आसपास के क्षेत्र से ऐसी विराट जनमेदनी उमड़ पड़ी कि मानो कुंभ का नजारा हो। इस विराट जनसागर को सम्बोधित करते हुए पूज्य बापूजी बोले : ''जब तक ईश्वर में प्रीति नहीं होती और राज्य-विस्तार में, सुख-विस्तार में प्रीति होती है तो रावण की तरह बड़ी-बड़ी ऊँचाइयों को पाकर भी जीव गिरता है। इसलिए भगवान से प्रार्थना करो कि 'भगवान ! हमें तुम्हारी प्रीति मिल जाय।' और भगवान की प्रीति पाने के लिए 'सब वासुदेव है...' ऐसा चिंतन करो। भगवान की प्रीति करते-करते सबमें सद्भाव आयेगा तो भगवान तुम्हारी बुद्धि में बुद्धियोग देंगे। और बुद्धियोग के आगे रावण की लंका का सुख भी कुछ नहीं, हिरण्यकशिपु का हिरण्यपुर भी कुछ नहीं और इन्द्रदेव का इन्द्रासन भी कुछ नहीं... बुद्धियोग ऐसी ऊँची चीज है ! तो भगवान को प्रीतिपूर्वक भजें, प्रीतिपूर्वक प्रार्थना करें आज दशहरे की संध्या पर कि 'जो सबसे श्रेष्ठ है, उसमें हमारी रुचि करना।' सबसे श्रेष्ठ तो आत्मज्ञान ही है, भगवान जानते हैं।''

धुलियावासियों की प्रार्थना पर **धुलिया आश्रम (महा.)** में **१९ अक्टूबर** को सत्संग हुआ। यहाँ भी बड़ी संख्या में साधक-सत्संगियों का जमावड़ा हो गया और पूज्यश्री के श्रीमुख से बहती सत्संग-धारा में सभी पावन हुए। ❑

श्राद्ध व आत्मसाक्षात्कार दिवस पर सम्पन्न सेवाकार्य

गरीबों व विद्यार्थियों में खीर-रोटी, भोजन-प्रसाद एवं मरीजों में फलों का वितरण करके तथा गौओं को गोग्रास देकर पूज्य बापूजी के शिष्यों ने प्राणिमात्र में आत्मभाव दृढ़ किया ।

स्थानाभाव के कारण यहाँ कुछ ही अंश दिखा पा रहे हैं, अन्य अनेक स्थानों की तस्वीरों हेतु आश्रम की वेबसाइट www.ashram.org देखें ।

(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2011)
WPP LIC No. CPMG/GJ/41/09-11
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 31-12-2011)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2009-11
WPP LIC No. U (C)-232/2009-11
MH/MR-NW-57/2009-11
MR/TECH/WPP-21/NW/2010
'D' No. MR/TECH/47.4/2010

देश-विदेश को पावन करती मधुर कीर्तन-धारा

न्यूजर्सी

न्यूयॉर्क

न्यूयॉर्क

रोहतक

पुणे

कठुआ

छिन्दवाड़ा

औरंगाबाद

अम्बाला

हँसते-मुस्कराते, आनंद लुटाते यह गाड़ी मुक्ति के रास्ते जा रही है ।

पूज्य बापूजी के आत्मसाक्षात्कार-दिवस पर पुणेवासियों के हृदय में ब्रह्मानंद का प्राकट्य हुआ ।

देशभर में संकीर्तन यात्राएँ निकलीं लेकिन स्थानाभाव के कारण यहाँ कुछ ही अंश दिखा रहे हैं ।
आश्रम के विभिन्न सेवाकार्यों की विस्तृत जानकारी हेतु आश्रम की वेबसाइट www.ashram.org देखें ।

Posting at PSO Ahmedabad between 1st to 17th of every month. ✻ Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. ✻ Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.